



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 93]

नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल 10, 2012/चैत्र 21, 1934

No. 93]

NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 10, 2012/CHAITRA 21, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 अप्रैल, 2012

अन्तिम जांच परिणाम

विषय : चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "एसीटोन" के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के संबंध में मध्यावधि समीक्षा जांच ।

सं. 15/2/2011-डीजीएडी.—समय-समय पर संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क अथवा अतिरिक्त शुल्क का आकलन, संग्रहण एवं क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है), ने अन्य बातों के साथ-साथ चीनी ताइपेई (जिसे आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित तथा आई टी सी एच एस के उप-शीर्ष 2914.11 के अंतर्गत आने वाले "एसीटोन" (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी। अन्तिम जांच परिणाम दिनांक 4 जनवरी, 2008 को जारी किए गए थे और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क सीमा-शुल्क अधिसूचना सं. 33/2008-सीमा-शुल्क द्वारा दिनांक 11 मार्च, 2008 को लगाया गया था।

2. प्राधिकारी को मै. फारमोसा कैमिकल एंड फाइबर कारपोरेशन, चीनी ताइपेई से एक विधिवत पुष्टिकृत आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें प्राधिकारी से चीनी ताइपेई की मूल के या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा करने का अनुरोध किया गया था। मध्यावधि समीक्षा करने के लिए आवेदक ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित आधार सूचीबद्ध किए हैं :-

- कि मूल जांच की जांच अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान मूलभूत कच्ची सामग्री (अर्थात् बेंजीन तथा प्रोपीलीन) की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- चीनी ताइपेई से निर्यातों के संबंध में मूल जांच की तुलना में भारत के लिए संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यही प्रवृत्ति चीनी ताइपेई से अन्य देशों के लिए निर्यात कीमत के संबंध में देखी गई है।
- जांच अवधि के दौरान आवेदक ने नकारात्मक पाटन मार्जिन का दावा किया है।
- अधिनियम में संशोधन के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना की प्रणाली में परिवर्तन आ गया है।
- मूल जांच की तुलना में भारत में घरेलू बिक्री कीमत में भी भारी वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी ने यह माना कि ऊपर उल्लिखित परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण मध्यावधि समीक्षा शुरू करना आवश्यक है ।

3. स्वयं को इस बात से संतुष्ट करने के बाद कि समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए आवेदक ने पर्याप्त सकारात्मक सूचना प्रस्तुत की है, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क (5) के अनुसार 15 अप्रैल, 2011 की अधिसूचना सं. 15/2/2011—डीजीएडी के तहत संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा की जांच शुरू की ।

ख. प्रक्रिया

4. इस कार्यवाई में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- i. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार भारत स्थित संबद्ध देशके आर्थिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था ।
- ii. प्राधिकारी ने 15 अप्रैल, 2011 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत स्थित संबद्ध देश के आर्थिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार घरेलू उत्पादकों को भेजीं । इस जांच के पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर दायर करें और अपने विचारों से लिखित में अवगत कराएं । निर्यातकों को भेजे गए पत्र तथा प्रश्नावलियों की प्रतियां ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ संबद्ध देश के आर्थिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र को इस अनुरोध के साथ भेजी गई थी कि वे संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें ।
- iii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार आवेदक की ओर से दायर आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, घरेलू उत्पादकों और आर्थिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र को उपलब्ध कराई गई थी ।
- iv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:

क्र. सं.	कंपनी का नाम
1.	ताइवान प्रोस्पेरिटी कैमिकल कार्पोरेशन, 9वीं मंजिल, नं. 113 चुंगशान एन रोड सैक्टर-2, ताइपेई 104, ताइवान
2.	चांग चुन प्लास्टिक कं. लि., 7वीं मंजिल, नं. 301, सोंग कियांग रोड, ताइपेई, 104, ताइवान

अधिसूचना के उत्तर में मै. एफ सी एफ सी तथा ताइवान प्रोस्पेरिटी कैमिकल्स कारपोरेशन ने प्रश्नावली के उत्तर दायर किए । इन दोनों कंपनियों को छोड़कर किसी अन्य निर्यातक ने उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है ।

- V. पाटनरोधी, नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना हेतु भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात घरेलू उत्पादकों, आयातकों तथा प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :-

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. सेकहेनेक्टडी हरदीलिया लि., एयर इंडिया बिल्डिंग, नरीमन प्वाइंट, मुंबई-400 021
2.	मै. हिंदुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि. रसयानी ताल, पनवेल, जिला रायगढ़, महाराष्ट्र-410207
3.	मै. कुन्दन ग्रुप, कुन्दन हाऊस, डी-17, सेंट्रल मार्केट, प्रशांत विहार, दिल्ली-110085
4.	मै. अकिन कैमिकल्स पुट लि., जाश चैम्बर्स, 5वां तल, सर पी एम रोड, फोर्ट, मुंबई-400 021
5.	मै. पोन पुर कैम, प्लॉट नं. 14, कमरा नं. 5, प्रथम तल, पॉपुलर प्लाजा, गांधीधाम-370207
6.	मै. एस आई ग्रुप इंडिया लिमिटेड, जुई नगर रेलवे स्टेशन के सामने, थाने बेलापुर रोड, टरबहे, नवी मुंबई, महाराष्ट्र-400 705
7.	मै. परसोल कैमिकल्स लि., परसोल हाऊस, प्लॉट नं. ए-17/2/3, टीटीसी इंडस्ट्रियल एरिया, खैरने एम आई डी सी, नवी मुंबई- 400 710
8.	मै. केतुल इंटरप्राइजेज, प्लॉट नं. 14/15, सैक्टर 1/ए, दूसरा तल, कमरा नं.15, दूसरा तल, पॉपुलर प्लाजा, गांधीधाम, गुजरात
9.	मै. सोनाकमल इंटरप्राइजेज प्रा. लि., 602, सुनील एन्क्लेव, 6ठा तल, पेरिस हिल रोड, अंधेरी कुर्ला रोड, अंधेरी ईस्ट, मुंबई- 400 099
10.	मै. अपरा इंटरप्राइजेज, 1, साई चैम्बर्स, दूसरा तल 365, नरसी नाथ स्ट्रीट, कथा बाजार, मुंबई- 400 009
11.	मै. पायौनीर कैमिकल इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं. 28, सैक्टर-9, शॉप नं. 7, जय अम्बे चैम्बर्स, गांधीधाम, गुजरात- 370201
12.	मै. संजय कैमिकल्स इंडिया प्रा. लि., ऑफिस नं. 5, प्रथम तल, सरस्वती बिल्डिंग, प्लॉट नं. 501, वार्ड 12सी, गांधीधाम (कच्छ), गुजरात
13.	मै. रमेश कुमार एंड क.-201/203 प्रथमेश, दूसरा तल, रघुवंशी मिल कम्पाउंड, सेनापति बापत मार्ग, लोअर परेल, मुंबई- 400 013

उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है। घरेलू उत्पादकों में से मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि. ने क्षति संबंधी सूचना/आंकड़ों के साथ अपने अनुरोध दायर किए हैं।

- vi. वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जांच अवधि तथा पूर्ववर्ती तीन वर्षों के आयात के आंकड़े मांगे गए थे।
- vii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।
- viii. जैसा कि उल्लेख किया गया है, चीनी ताइपेई के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा करने के लिए प्राधिकारी से अनुरोध करते हुए यह आवेदन मै. फारमोसा कैमिकल एंड फाइबर कारपोरेशन, चीनी ताइपेई द्वारा दायर किया गया था। जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक लि., कोची ने क्षति विश्लेषण हेतु सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच संभव सीमा तक सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर की है। हुई क्षति तथा भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत, उसे बनाने और बेचने की लागत निकाली जा सके और यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ix. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को 25 जुलाई, 2011 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान किया। जिन पक्षकारों ने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त किए थे उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर जहां संगत पाया गया है, इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- x. वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 अक्टूबर, 2009 से 30 सितंबर, 2010 (12 माह) तक की है। तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 तथा जांच अवधि शामिल है।
- xi. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।

- xii. जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज किए हैं।
- xiii. *** यह चिन्ह इस विवरण में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ग. प्रकटन विवरण के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच

5 प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग की ओर से निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- पाटन की संभावना का निर्धारण करने के लिए प्रतिवादी निर्यातकों ने प्राधिकारी को कोई सामग्री नहीं दी है।
 - प्राधिकारी ने उत्पाद की वर्तमान स्थिति की अनदेखी की है जिससे स्पष्टतः पता चलता है कि घरेलू उद्योग पुनः वित्तीय घाटे का सामना कर रहा है।
 - क्षति मार्जिन के निर्धारण में उचित तुलना के सिद्धांतों की अनदेखी की गई है।
- (i) घरेलू उद्योग की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ करते समय घरेलू उद्योग की भाड़ा लागत की पूर्णतः अनदेखी की गई है।
- (ii) निर्धारित क्षति रहित कीमत घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त छूट और कमीशन पर विचार किए बिना है। इसके ठीक विपरीत निर्यातकों द्वारा प्रदत्त छूट और कमीशनों को आयातों की पहुंच कीमत में शामिल किया गया है।
- (iii) प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल ऋण लागत हेतु निर्यात कीमत की कटौती की है। तथापि, यह नीति क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु नहीं अपनाई गई है। चूंकि घरेलू उद्योग की नकद छूट को अलग रखा गया है, इसलिए पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन दोनों के निर्धारण हेतु निर्यातक द्वारा व्यय की गई ऋण लागत को भी अलग रखा जाना चाहिए।
- (iv) चूंकि क्षति रहित कीमत का निर्धारण कारखाना स्तर पर किया गया है, इसलिए क्षति मार्जिन के प्रयोजनार्थ निर्यात कीमत पर भी कारखाना स्तर पर विचार किया जाना चाहिए। ऐसा कोई कानूनी आधार नहीं है कि आयातों की पहुंच कीमत को निर्यातक द्वारा व्यय की गई भाड़ा लागत में शामिल किया जाए।
- घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के तर्कों की अनदेखी की गई है। यह तर्क दिया गया है

- (v) निवल अचल परिसंपत्तियां उस स्थिति में लाभ के निर्धारण का आधार नहीं बन सकती जब घरेलू उद्योग द्वारा स्थापित ऐसीटोन का मूल संयंत्र का पहले ही पूर्ण मूल्यहास कर दिया गया है ।
- (vi) नियमों में ऐसे उचित लाभ की मात्रा निर्धारित नहीं है, जिस पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को विचार करना चाहिए । संयंत्र की अधिक आयु को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग के लिए आय की उच्च दर पर विचार करना चाहिए । किसी अत्यंत नए निवेश को 22 प्रतिशत आय प्रदान करना और 20-25 वर्ष पुराने निवेशों पर 22 प्रतिशत आय प्रदान करना किसी तर्काधार से रहित है ।
- (vii) इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने यह नोट किया है कि वर्तमान कानून भी घरेलू उद्योग के अनुचित पाटित आयातों से सुरक्षा की मांग करने के मूल अधिकार के खिलाफ है । घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि क्षति रहित कीमत का निर्धारण अनुचित है और इससे घरेलू उद्योग को अनुचित रूप से कम संरक्षण मिल रहा है । इस संबंध में निम्नलिखित संगत हैं :-
- यह तर्क दिया गया है कि प्राधिकारी के लिए वास्तविक कच्ची सामग्री तथा उपयोगिताओं की खपत पर विचार करना अपेक्षित है । इसके अलावा, यह अनुचित होगा कि क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु वास्तविक उत्पादन की अनदेखी की जाए और उत्पादन के किसी अन्य आधार को अपनाया जाए । इसके अलावा, लगाई गई पूंजी का निर्धारण अचल परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य या कम से कम अचल परिसंपत्ति के सकल मूल्य पर विचार करते हुए किया जाए और निवल अचल परिसंपत्तियों का उक्त अंगीकरण नितांत अनुचित है । जब इस बात पर विचार किया जाए कि कुछ निवेश काफी पुराने हैं और इसलिए निवल अचल परिसंपत्तियों में निवेशों के सही मूल्य का पता नहीं चलता है । वस्तुतः वर्तमान प्रयोजनार्थ सर्वाधिक उचित मूल्य निवेशों का वर्तमान मूल्य है ।
 - यह तर्क दिया गया है कि पाटन की संभावना का कोई निर्धारण नहीं किया गया है ।
 - क्षति की संभावना के सभी संगत कारकों पर विचार नहीं किया गया है ।
 - किसी मध्यावधि समीक्षा में क्षति रहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति के बीच अंतर महत्व नहीं रखता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

6 प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की निम्नानुसार जांच की है :-

- प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने इस बात की विधिवत जांच की है कि क्या पाटन समाप्त करने के लिए वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क को लगातार जारी रखना आवश्यक है और क्या शुल्क को समाप्त किए जाने या उसमें परिवर्तन किए जाने या दोनों स्थितियों में क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से स्पष्ट होता है ।
- जहां तक उत्पाद की वर्तमान स्थिति का संबंध है, प्राधिकारी ने केवल जांच अवधि के संदर्भ में ही सूचना/आंकड़ों की जांच और मूल्यांकन ही नहीं किया है अपितु, क्षति के दावों की पुनरावृत्ति का आकलन करने और अपने निष्कर्ष निकालने के लिए जांचोत्तर अवधि की सूचना/आंकड़ों का विश्लेषण भी किया है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि क्षति मार्जिन के निर्धारण में उचित तुलना के सिद्धांतों की अनदेखी की गई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तर्क निराधार है क्योंकि प्राधिकारी ने निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना संबद्ध वस्तु के संबंधित पहुंच मूल्य के साथ करने की अपनी सुस्थापित परंपरा के अनुसार तुलना की है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग के क्षति रहित कीमत के तर्कों की अनदेखी की गई है, प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि उन्होंने इस विषय पर पाटनरोधी नियमों के अनुसार ही क्षति रहित कीमत की गणना की है ।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति की संभावना के समस्त संगत कारकों पर विचार किया गया है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से स्पष्ट हो जाएगा ।
- इसके अलावा, प्राधिकारी इस विचार से सहमत नहीं हैं कि किसी मध्यावधि समीक्षा में क्षति रहित कीमत और निवल बिक्री प्राप्ति के बीच अंतर कोई महत्व नहीं रखता है ।

घ. घरेलू उद्योग के अनुरोध

7. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- मध्यावधि समीक्षा में यह निष्कर्ष निकालने के लिए केवल वर्तमान निष्पादन ही पर्याप्त है कि क्या इस चरण पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जा सकता है । पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर प्राधिकारी के लिए संभावित स्थिति पर विचार किया जाना अपेक्षित होता है । किसी हितबद्ध पक्षकार के लिए यह सिद्ध करना अपेक्षित होता है कि जिन परिस्थितियों के आधार पर शुल्क लागू किया गया था, उनमें इतना परिवर्तन हुआ है कि शुल्क को समय पूर्व समाप्त करना अथवा शुल्क की राशि में परिवर्तन करना अपेक्षित हो गया है । निर्यातक ने केवल यह दावा किया है कि पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में इतना अधिक परिवर्तन हुआ है कि समीक्षा आवश्यक हो गई है लेकिन उन्होंने यह दावा नहीं किया है कि पाटनरोधी शुल्क

समाप्त किए जाने की स्थिति में पाउन एवं परिणामी क्षति होने की संभावना नहीं है, इसलिए जांच की वर्तमान शुरुआत का कोई औचित्य नहीं है ।

- मध्यावधि समीक्षा जांच उन परिवर्तित परिस्थितियों तक सीमित होती है जिनके बारे में आवेदक ने आवेदन में आरोप लगाया है जैसा कि उच्चतम न्यायालय ने भी ऋषि रूप पॉलिमर्स प्रा.लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी एवं अपर सचिव के मामले में निर्णय दिया है इस बात को सिद्ध करने का दायित्व याचिकाकर्ता पर होता है न कि घरेलू उद्योग पर कि लागू पाटनरोधी शुल्क में संशोधन करने या उसे समाप्त करने की जरूरत है जिसकी पुष्टि पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा हेतु आवेदन तैयार करने विषयक मार्गदर्शी सिद्धांतों में भी की गई है जिसमें यह उल्लेख है कि यह सिद्ध करने का दायित्व आवेदक का है कि शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत की समीक्षा के लिए मध्यावधि समीक्षा अपेक्षित है । शुल्क समाप्ति के लिए संबद्ध निर्यातक द्वारा "कोई पाटन" न किया जाना पर्याप्त नहीं है । निर्यातक को यह प्रदर्शित करना चाहिए कि उन परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन आया है जिनके आधार पर उपाय लागू किए गए थे और ये परिवर्तन स्थायी हैं जिनके आधार पर उपाय लागू किए गए थे और ये परिवर्तन स्थायी स्वरूप के हैं जैसा कि यू एस ड्रम्स मामले में डब्ल्यू टी ओ ने माना है ।
- किसी मध्यावधि समीक्षा जांच में निर्यातक के लिए यह सिद्ध करना अपेक्षित होता है कि कोई पाटन नहीं हुआ है और पाटनरोधी शुल्क में संशोधन किए जाने या उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में उत्पाद के पाटन की संभावना नहीं है । निर्यातक का यह दावा ही नहीं है कि शुल्क में संशोधन किए जाने या उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में उत्पाद के पाटन की संभावना नहीं है । निर्यातक का यह दावा सही नहीं है कि शुल्क में संशोधन किए जाने या उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है । न ही इस संबंध में कोई सकारात्मक साक्ष्य उपलब्ध कराया गया है । इस अवधि में ताईवान से हुए आयातों में वृद्धि हुई है । निर्यात कीमत क्षति रहित कीमत से कम है जिससे कम कीमत पर बिकी हुई है । इन तथ्यों से यह पता चलता है कि शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति और अधिक गंभीर हो जाएगी ।
- क्षति रहित कीमत का निर्धारण वर्तमान बाजार मूल्य पर सकल अचल परिसंपत्तियों पर विचार करते हुए किया जाना अपेक्षित है । घरेलू उद्योग के मूल संयंत्र पूर्ण मूल्यहास किया गया है और यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि घरेलू उद्योग केवल इस वजह से "कोई लाभ अर्जित" नहीं कर सकता कि खातों में निवेश का पूर्ण मूल्यहास किया गया है । क्षति रहित कीमत में फैंक्टरी से देश के भीतर विस्तारित भांडागार तक भारतीय भाड़ा, अंतिम अवधि में मात्रात्मक छूट तथा नकद छूट शामिल की जानी चाहिए ।
- स्थापित क्षमता, उत्पादन तथा बिक्री से संबंधित सूचना गोपनीय होने का दावा किया गया है, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन की तुलना के सूचीबद्ध रूपांतरण का प्रकटन नहीं किया गया है, कच्ची सामग्री प्रोपीलीन के लिए दावा की गई कीमत के समर्थन हेतु कोई साक्ष्य संलग्न नहीं किया गया है ।

- पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण माह आधारित विश्लेषण पर किया जाना चाहिए क्योंकि मासिक आधार पर कच्ची सामग्री की कीमत में भारी परिवर्तन हुआ है जिससे पाटन में वास्तविक घट-बढ़ प्रदर्शित करना कठिन हो गया है ।
- ऐसी कोई विधिक अपेक्षा नहीं है कि जिन कंपनियों ने पूर्व में भाग लिया था, उन्हें अब भी भाग लेना चाहिए ।
- किसी मध्यावधि समीक्षा में क्षति के आंकड़े उपलब्ध कराना अनिवार्य अपेक्षा नहीं है । इसके अलावा, यह मानते हुए परंतु उसे स्वीकार न करते हुए कि घरेलू उद्योग को वर्तमान अवधि में क्षति नहीं हुई है, यह वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने के लिए सर्वथा अपर्याप्त है । आवेदक/निर्यातक को यह सिद्ध करना चाहिए कि पाटनरोधी शुल्क को समय से पूर्व समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन एवं परिणामी क्षति होने की संभावना नहीं है ।
- कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि निर्यात तथा घरेलू कीमत में वृद्धि से काफी कम होने का दावा गलत है क्योंकि एक वर्ष की निवल बिक्री प्राप्ति की तुलना अलग अवधि की सूची कीमत के साथ नहीं की जा सकती । पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ केवल निवल बिक्री प्राप्ति संगत है और सूची कीमत में केवल उस अधिकतम कीमत का उल्लेख होता है जिस पर पक्षकार सामग्री की आपूर्ति करने का इच्छुक होता है ।
- वर्तमान प्रयोजनार्थ मार्ग-पूर्ति में अंतर पूर्णतः अप्रासंगिक है । निर्यात मात्रा में केवल इस वजह से वृद्धि हुई है कि विदेशी उतपादकों ने लागू किए गए पाटनरोधी शुल्क को आत्मसात कर लिया है न कि मांग-पूर्ति में अंतर के कारण ।
- सामान्य मूल्य के निर्धारण की कार्यप्रणाली में मात्र अंतर से "पाटन तथा परिणामी क्षति की कोई संभावना नहीं" की पुष्टि नहीं हो सकती ।
- ताईवान से तीसरे देशों को निर्यात अत्यधिक पाटित कीमतों पर हुए थे । ताईवान से तीसरे देश को आयात के संबंध में पाटनमार्जिन भी सकारात्मक है । जांच अवधि के बाद निर्यात कीमत जांच अवधि की निर्यात कीमत से कम है ।
- एच एफ एसिड मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणाम पर भरोसा करना इस कारण से निराधार है कि प्राधिकारी ने उस मामले में यह पाया था कि क्षति की संभावना के बारे में विरोधाभासी साक्ष्य है ।
ऐसी स्थिति में जहां अधिकांश परिसंपत्तियां उनके मामूली खाता मूल्य पर होती हैं, निवल अचल परिसंपत्तियों पर 22 प्रतिशत आय का तात्पर्य यह है कि घरेलू उद्योग को कोई लाभ नहीं हुआ है । अतः आय की उच्च दर उपलब्ध कराई जानी चाहिए । वर्तमान कार्य प्रणाली से उस सीति में घरेलू उद्योग को कोई आय प्राप्त नहीं होगी यदि लगाई गई पूंजी को निवल अचल परिसंपत्ति जमा कार्यशील पूंजी के रूप में परिभाषित किया जाएगा और उचित आय 22 प्रतिशत रखी जाएगी । वर्ष 1986 में घरेलू उद्योग की निवल अचल परिसंपत्ति इस समय निवल अचल परिसंपत्ति से काफी अधिक थी और यदि निर्यातक के दावे के अनुसार लाभ के उस स्तर की अनुमति दी जाए तो घरेलू उद्योग की लाभ की मात्रता काफी अधिक होगी । कानून में केवल सकल अचल परिसंपत्तियों तथा परिसंपत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर विचार करने का निषेध है । नियमों में यह उपबंध नहीं है कि ऐसी निवल अचल परिसंपत्ति पर उसके खाता मूल्य के अनुसार विचार किया जाना चाहिए न कि उसके बाजार मूल्य के अनुसार । इसके अलावा, कानून में उचित लाभ के उस स्तर के बारे में कोई उल्लेख नहीं है जिसे घरेलू उद्योग को अर्जित करना चाहिए । संयंत्र जैसे-जैसे पुराना होता जाता है वैसे-वैसे घरेलू उद्योग को प्राप्तव्य आय की दर में भी वृद्धि होनी

चाहिए । लेखाकरण की भाषा में लगाई गई पूंजी की परिभाषा का खासकर तब कोई महत्व नहीं रह जाता जब उससे कानून के प्रत्येक उद्देश्य का अधिकमण अथवा अतिलघन होता हो । यदि लगाई गई पूंजी का निर्धारण निवल अचल परिसंपत्ति पर विचार करते हुए किया जाएगा तो इसका तात्पर्य यह होगा कि संयंत्र पुराने होने की वजह से ही घरेलू उद्योग को कोई लाभ अर्जित नहीं करना चाहिए

सहयोगी निर्यातकों के अनुरोध

8. सहयोगी निर्यातकों की ओर से संक्षेप में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- एसीटोन के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि मध्यावधि समीक्षा जांच की अवधि के दौरान भारत में और विश्व में एसीटोन की कीमत में वृद्धि से काफी कम हुई है।
- एसीटोन की वैश्विक कीमत में वृद्धि हुई है । एसीटोन की कीमत में समग्र वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग भारी मुनाफा कमा रहा है ।
- मध्यावधि समीक्षा जांच की जांच अवधि के बाद भी भारत में एसीटोन की कीमत में उर्ध्वगामी वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है ।
- ताईवान से भारत को निर्यात अपाटित कीमत पर हो रहे हैं ।
- मध्यावधि समीक्षा जांच की जांच अवधि के बाद ताईवान से निर्यातों में वृद्धि प्रदर्शित हो रही है ।
- ताईवान से एसीटोन पर पाटनरोधी शुल्क अपेक्षित नहीं है जिसे तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए । इस बात की संभावना नहीं है कि पाटनरोधी शुल्क में संशोधन किए जाने या उसे समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति की पुनरावृत्ति होगी या वह जारी रहेगी ।
- टी पी सी सी तथा एफ सी एफ सी, दोनों 100 प्रतिशत क्षमता उपयोग पर प्रचालन कर रही हैं और उपलब्ध बेशी क्षमता के अभाव में इस बात की संभावना नहीं है कि ताईवान से एसीटोन पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध वस्तु का पाटन किया जाएगा ।
- ताईवान से निर्यातित एसीटोन से न तो घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है और न ही क्षति रहित कीमत से कम बिक्री हो रही है । यदि कीमत में कोई कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री नहीं हो रही है तो पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने का कोई औचित्य नहीं है ।
- लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत आय का प्रावधान पूर्णतः अतार्किक है जिसकी समीक्षा की जानी चाहिए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

9. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की निम्नानुसार जांच की है :

- घरेलू उद्योग की ओर से यह तर्क दिया गया है कि मध्यावधि समीक्षा में यह निष्कर्ष निकालने के लिए केवल वर्तमान निष्पादन अपर्याप्त है कि क्या इस रण पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त किया जा सकता है और यह कि प्राधिकारी के लिए पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की संभावित स्थिति पर विचार करना अपेक्षित है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि

पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 में प्राधिकारी को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह ऐसे किसी हितबद्ध पक्षकार के अनुरोध पर अन्य बातों के साथ-साथ पाटनरोधी शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत की समीक्षा करे जिसने ऐसी समीक्षा की जरूरत की पुष्टि करते हुए सकारात्मक सूचना प्रस्तुत की है और निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद उचित अवधि बीत गई है और ऐसी समीक्षा के बाद प्राधिकारी उस स्थिति में शुल्क समाप्त हेतु केन्द्र सरकार को सिफारिश करेंगे जहां वह इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उक्त पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने या उसमें परिवर्तन किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है और इसलिए अब इसकी जरूरत नहीं है। इस मामले में चीनी ताइपेई के एक निर्यातक/उत्पादक से विधिवत पुष्टिकृत आवेदन प्राप्त हुआ था।

- जहां तक इस मध्यावधि समीक्षा की जांच शुरूआत का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीनी ताइपेई के आवेदक निर्यातक/उत्पादक ने प्रथम दृष्टया इस मामले की पुष्टि की है कि इस अवधि में परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन आया है जिससे संबद्ध वस्तु पर लागू पाटनरोधी शुल्क पर पुनर्विचार करने की जरूरत वांछनीय हो गई है। यह सच है कि इस अवधि में चीनी ताइपेई से आयातों में वृद्धि हुई है परंतु यह भी सच है कि ये आयात ऐसी कीमत पर ही हुए हैं जिससे घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं होती है और न ही इसकी संभावना है। पहुंच मूल्य निर्धारित क्षति रहित कीमत से काफी अधिक है जिससे कम कीमत पर नकारात्मक बिक्री हुई है। ऐसी ही प्रवृत्ति जांच अवधि के तुरंत बाद की तिमाही अवधियों में देखी गई है। आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत की तुलना में उच्च निवल बिक्री प्राप्ति लगातार हासिल कर रहा है। संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग पर न तो प्रतिकूल कीमत प्रभाव और न ही कोई प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव देखा गया है।
- जहां तक क्षति रहित कीमत के निर्धारण का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने क्षति रहित कीमत का निर्धारण इस विषय पर संगत पाटनरोधी नियमों के अनुसार किया है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन का निर्धारण माह-वार विश्लेषण के आधार पर किया जाना चाहिए क्योंकि कच्ची सामग्री की कीमत में भारी परिवर्तन हो गया है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस अनुरोध पर सहमत होते हुए उन्होंने केवल माह-वार आधार पर पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन का विश्लेषण किया है।
- जहां तक गोपनीयता से जुड़े मुद्दों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के लब्ध के पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरान्त प्राधिकारी ने उक्तानुसार

गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग के लिए मध्यावधि समीक्षा में क्षति के आंकड़े प्रस्तुत करने की अपेक्षा अनिवार्य नहीं है; प्राधिकारी ऐसी किसी राय से पूर्णतः असहमत हैं। किसी पाटनरोधी जांच में प्रत्येक हितबद्ध पक्षकार के लिए अपनी सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करना अनिवार्य होता है ताकि प्राधिकारी कोई तथ्यपरक जांच परिणाम निकाल सकें। सूचना/आंकड़े नहीं प्रस्तुत किए जाने से ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें प्राधिकारी उपलब्ध तथ्यों के आधार पर आगे कार्रवाई करने के लिए बाध्य होंगे। यह मानते हुए कि वर्तमान अवधि में घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है तो भी उसे अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करने चाहिए और इस मामले की पुष्टि करनी चाहिए कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से उसे क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।
- जहां तक निवल बिक्री प्राप्ति आदि की तुलना में कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि से जुड़े दावों और प्रति दावों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने पाटनरोधी नियमों के अनुसार इस विषय में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त सूचना/आंकड़ों का विधिवत संज्ञान लेते हुए इसका विश्लेषण किया है।
- जहां तक इस दावे का संबंध है कि निर्यात मात्रा में वृद्धि केवल विदेशी उत्पादकों द्वारा लागू पाटनरोधी शुल्क को आत्मसात किए जाने के कारण हुई है न कि माग पूर्ति में अंतर के कारण, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस दावे की पुष्टि नहीं की गई है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि चीनी टाईपेई से तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु का निर्यात अत्यधिक पाटित कीमत पर किया गया है और परिणामी क्षति मार्जिन सकारात्मक है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने इसकी जांच की है और यह पाया है कि यह तर्क तथ्यों पर आधारित नहीं है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से स्पष्ट हो जाएगा। यहां तक कि जांच अवधि के बाद निर्यात कीमत की जांच की गई है ताकि घरेलू उद्योग के क्षति की पुनरावृत्ति होने के मुद्दे की पुनः आकलन किया जा सके, परंतु इस विश्लेषण से यह पता चलता है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों के अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात के कारण घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है।
- जहां तक निर्यातकों के इस दावे का संबंध है कि मध्यावधि समीक्षा जांच की जांच अवधि के दौरान एसीटोन के विनिर्माण हेतु कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि भारत तथा विश्व में एसीटोन की कीमत में वृद्धि से काफी कम है और यह कि एसीटोन

की कीमत में समग्र वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग काफी मुनाफा कमा रहा है और यह कि चीनी ताइपेई से संबद्ध वस्तु पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क की जरूरत नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच को शुरू करने के बाद इन दावों की जांच और मूल्यांकन किया गया था जैसा कि प्रकटन विवरण के संगत खंडों से स्पष्ट हो जाएगा ।

- जहां तक निर्यातक के इस तर्क का संबंध है कि लगाई गई पूंजी पर 22% की आय पूर्णतः अतार्किक है और इसकी समीक्षा की जानी चाहिए; प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने क्षति रहित कीमत का निर्धारण इस विषय पर संगत पाटनरोधी नियमों के अनुसार किया है ।

ड विचाराधीन उत्पाद और घरेलू “समान वस्तु”

10. मूल जांच के समय में विचाराधीन उत्पाद एसीटोन था । इस समीक्षा के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद वहीं रहता है । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा की गई मूल जांच के अनुसार इस उत्पादन को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

“विचाराधीन उत्पाद एसीटोन है । एसीटोन कार्बनिक रसायन है इसे डाइमिथाइल केटोन के नाम से भी जाना जाता है तथा औषधियों, कृषि रसायनों, डाई के सामानों, कुछ विस्फोटकों तथा अनुषंगी रसायनों के विनिर्माण में इसका इस्तेमाल किया जाता है । एसीटोन को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के उप-शीर्ष 29141100 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है ।”

“यह एकल ग्रेड में उत्पादित एक मूल कार्बनिक रसायन है । यह ईथर जैसी गंधी वाला एक रंगहीन द्रव्य है । इसे या तो विलायक या एक मध्यवर्ती जैसे अनेक रासायनिक संश्लेषणों में उपयोग किया जाता है । इसका उपयोग बल्क औषधियों, कृषि रसायनों, डाई सामानों, कुछ विस्फोटकों तथा अनुषंगी रसायनों के निर्माण में किया जाता है । एसीटोन का उपयोग विशेष रूप से आईसोफोरोन, डाइसीटोन, अल्कोहल, मिथाइल मेथाक्राइलेट तथा बिसफेनाल ए के विनिर्माण में किया जाता है । इसके अलावा इसका उपयोग कुछ रबड़ रसायनों या आक्सी एसीथिलिन सेल्युलोस एसिटेड के विनिर्माण में किया जाता है ।”

11. यह उत्पाद आई टी सी एच एस के सी.शु. टैरि शीर्ष से 2914.11 के अंतर्गत वर्गीकृत है । तथापि, उक्त सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है ।

च. घरेलू उद्योग का क्षेत्र तथा आधार

12. इस जांच की शुरुआत के समान पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(ख) निम्नानुसार था:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

13. तथापि, जांच के बाद इस नियम में दो बार संशोधन हुआ है जो अब निम्नानुसार है:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ केवल शेष उत्पादकों के उल्लेख के रूप में निकाला जाएगा "।

14. पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा हेतु आवेदन चीनी ताईपेई में संबद्ध वस्तु के निर्यातक/उत्पादक मै. फार्मोसा कैमिकल एंड फाइबर कार्पोरेशन द्वारा दायर किया गया है । कंपनी ने जांच की शुरुआत के बारे में अपने अनुरोधों की पुष्टि करते हुए अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए हैं । जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध वस्तु के एक प्रमुख घरेलू उत्पादक मै. एच ओ सी एल ने भारत में ऐसीटोन का प्रमुख उत्पादन होने का दावा करते हुए अपना उत्तर दायर किया है और आवेदक द्वारा किए गए दावों का विरोध करने की मांग की है । जांच के प्रति प्राप्त उत्तर के अनुसार यह दावा किया गया है कि देश में ऐसीटोन का केवल एक और उत्पादक अर्थात् एस आई ग्रुप ऑफ इंडिया लि. है लेकिन मै. एच ओ सी एल का उत्पादन भारतीय उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा रखता है ।

15. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार मै. एच ओ सी एल भारत में संबद्ध वस्तु का एक प्रमुख उत्पादक है जिसका हिस्सा भारतीय उत्पादन में 50% से अधिक है । इस प्रकार मै. एच ओ सी एल पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ "घरेलू उद्योग" है ।

छ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

अपनाई गई कार्यप्रणाली

16. इस जांच में चीनी ताईपेई के दो निर्यातकों/उत्पादकों अर्थात् मै. फार्मोसा कैमिकल्स एंड फाइबर कार्पोरेशन (एफ सी एफ सी) और मै. ताईवान प्रोस्पेरिटी कैमिकल

कार्पोरेशन (टी पी सी सी) ने प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। सूचना/आंकड़ों के अवलोकन से दोनों कंपनियों द्वारा जांच अवधि के दौरान अत्यधिक घरेलू बिक्री सौदों का पता चलता है; अतः चीनी ताइपेई के दोनों निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमों और इस विषय पर उपलब्ध विनियमों के अनुसार दोनों कंपनियों द्वारा घरेलू बिक्री सौदों को हिसाब में लेते हुए किया गया है। कंपनियों द्वारा दायर सूचना/आंकड़ों का मौके पर सत्यापन किया गया था। इस प्रकार से सत्यापित आंकड़ों पर सामान्य मूल्य की गणना हेतु भरोसा किया गया है।

17. यह नोट किया गया है कि माह दर माह आधार पर संबद्ध वस्तु की कीमत में भारी अंतर रहा है; अतः पाटन मार्जिन का विश्लेषण माहवार आधार पर किया गया है। इसके अलावा, यह नोट किया गया है कि मै. टी पी सी सी ने बल्क आधार पर और डिब्बाबंद रूप में संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। अतः उक्त निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन की गणना इस भेद को स्वीकार करते हुए भी की गई है। आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध कंपनियों के बीच कुछ घरेलू बिक्रियां हुई हैं। संबद्ध कंपनियों के बीच इन सौदों की तुलना असंबद्ध कंपनियों के बीच हुए सौदों के साथ की गई है। मै. टी पी सी सी के मामले में संबद्ध कंपनियों और असंबद्ध कंपनियों को की गई बिक्रियों के बीच कोई खास अंतर नहीं पाया गया है। मै. एफ सी एफ सी के मामले में संबद्ध और असंबद्ध कंपनियों के बीच बिक्री में अंतर पाया गया है। सत्यापन के दौरान मै. एफ सी एफ सी ने यह बताया कि संबद्ध पक्षकारों को बिक्रियां असंबद्ध पक्षकारों को की गई बिक्रियों की तुलना में कुछ निबंधनों और शर्तों पर की गई हैं। संबद्ध पक्षकारों को की गई बिक्रियां कुल बिक्रियों का एक बड़ा भाग है और यह कि संबद्ध और असंबद्ध कंपनियों को बिक्रियों के बीच कीमत में अंतर बिक्री की मात्रा में अंतर के कारण आया है। निर्यातक द्वारा किए गए और मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित दावों के अनुसार समायोजनों को स्वीकार किया गया है और उन्हें संबंधित सहयोगी निर्यातक/उत्पादक के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य निकालने की दृष्टि से समायोजित किया गया है।

मै. फार्मोसा कैमिकल्स एंड फाइबर कार्पोरेशन

18. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह पता चलता है कि इसने पाइपलाइनों और कंटेनरों के जरिए घरेलू बाजार में *** मी.ट. संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। दावा किए गए समायोजनों में कुछ परिवर्तन मौके पर सत्यापन के दौरान किए गए थे। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़े, दुलाई शुल्क, ऋण लागत, भंडारण व्यय और तकनीकी सेवाओं के लिए समायोजनों का दावा किया है। मौके पर सत्यापन के दौरान यथासत्यापित समायोजन के दावों को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार कारखाना सामान्य मूल्य की गणना माहवार आधार पर की गई है।

मै. तार्इवान प्रोस्पेरिटी कैमिकल्स कार्पोरेशन

19. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह पता चलता है कि इसने पाइपलाइनों के जरिए और डिब्बा बंद रूप में घरेलू बाजार में *** मी.ट. संबद्ध वस्तु की बिक्री की है।

कंपनी ने पैकिंग, लदान प्रभार, अंतरदेशीय भाड़े, ऋण लागत और बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया है। मै. टी पी सी सी ने घरेलू रूप से संबद्ध वस्तु की बिक्री दो रूपों अर्थात् बल्क और डिब्बाबंद रूप में की है। डिब्बाबंद रूप (ड्रमों) में बिक्री किए जाने की स्थिति में पैकिंग लागत आती है। इसका उल्लेख कंपनी ने समायोजन के रूप में किया है। तथापि, उपर्युक्तानुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण बल्क बिक्री और डिब्बाबंद रूप में की गई बिक्री के लिए अलग-अलग किया गया है। मौके पर सत्यापन के दौरान यथासत्यापित समायोजन के दावों को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार कारखाना सामान्य मूल्य की गणना बल्क सामग्री और डिब्बा बंद रूप के लिए माहवार आधार पर की गई है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

20. असहयोगी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए सहयोगी निर्यातकों के लिए माहवार आधार पर निर्धारित उच्चतर सामान्य मूल्य स्वीकार किया गया है। कारखाना सामान्य मूल्य निकालने के लिए सहयोगी निर्यातकों को अनुमत समायोजनों को समायोजित किया गया है।

निर्यात कीमत

मै. फार्मोसा कैमिकल्स एंड फाइबर कार्पोरेशन

21. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह पता चलता है कि उसने जांच अवधि के दौरान 9 सौदों में भारत को *** मी.ट. ऐसीटोन का निर्यात किया है। तथापि, इन 9 सौदों में से 8 सौदे भारत को सीधी बिक्रियां थीं और एक सौदा भारत से बाहर के एक व्यापारी के जरिए किया गया था। उक्त व्यापारी ने वर्तमान मामले में अपना उत्तर दायर नहीं किया है और इस जांच में सहयोग नहीं किया है, अतः प्राधिकारी ने इस सौदे पर विचार नहीं किया है। यह देखा जाता है कि निर्यातक ने भारत को केवल बल्क बिक्रियां की हैं अतः बल्क हेतु निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है। यह नोट किया जाता है कि भारत को संबद्ध वस्तु की समस्त बिक्रियां एफ ओ बी आधार पर की गई थीं और भारत को एफ ओ बी तक निर्यात से जुड़े व्यय उत्पादक द्वारा किए गए हैं। कंपनी ने कमीशन, सीमाशुल्क निकासी फीस, बैंक छूट ब्याज, बैंक प्रभार, बंदरगाह सुविधा प्रभार, बंदरगाह प्रबंधन शुल्क, व्यापार संवर्धन सेवा शुल्क, बंदरगाह हैंडलिंग शुल्क, लदान सर्वेक्षण शुल्क और भंडारण प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया है। मौके पर सत्यापन के दौरान यथासत्यापित समायोजनों के इन दावों को स्वीकार किया गया है। तत्पश्चात् कारखाना निर्यात कीमत की गणना माहवार आधार पर की गई है।

मै. ताईवान प्रोस्पेरिटी कैमिकल्स कार्पोरेशन

22. कंपनी के उत्तर के अवलोकन से यह पता चलता है कि उसने जांच अवधि के दौरान 31 सौदों में भारत को *** मी.ट. ऐसीटोन का निर्यात किया है। तथापि, इन सौदों में से 30 सौदे भारत को सीधी बिक्रियां थीं और एक सौदा भारत से बाहर के एक व्यापारी के जरिए किया गया था। उक्त व्यापारी ने वर्तमान मामले में अपना उत्तर दायर नहीं किया है और इस जांच में सहयोग नहीं किया है, अतः प्राधिकारी ने इस सौदे पर विचार नहीं किया है। यह देखा गया था कि कुल 31 बीजकों में से 15 सौदे सी आई एफ आधार पर और 16 सौदे एफ ओ बी आधार पर किए जाने की सूचना दी गई थी। भारत को एफ ओ बी आधार पर की गई बिक्री के मामले में भारत को एफ ओ बी तक निर्यातों के संबंध में व्यय उत्पादक ने किया है और अन्य सभी व्यय

का वहन आयातक ने किया है। सी आई एफ आधार पर किए गए निर्यातों के मामले में सभी व्यय निर्यातक ने किए हैं। कंपनी ने कमीशन, अंतरदेशीय भाड़े, समुद्री बीमा, अंतर्राष्ट्रीय भाड़े, पैकिंग लागत, भंडारण एवं लदान, लदान प्रभारों, बंदरगाह सेवा शुल्क, व्यापार संवर्धन सेवाशुल्क, दलाली एवं हैंडलिंग प्रभारों अंतिम हैंडलिंग प्रभारों, अन्य पोतलदान प्रभारों, ऋण व्यय बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया है। मौके पर सत्यापन के दौरान किए गए समायोजनों में कुछ परिवर्तन किए गए थे। यह भी नोट किया गया था कि कंपनी ने भारत को बल्क और डिब्बाबंद उत्पाद के रूप में बिक्री की है। बल्क और डिब्बाबंद सामग्री के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण करने हेतु निर्यात सौदों को अलग किया गया था। यथासत्यापित निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों को स्वीकार किया गया है। अतः बल्क सामग्री और डिब्बाबंद सामग्री के लिए कारखाना निर्यात कीमत की अलग-अलग गणना माहवार आधार पर की गई है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात-कीमत

23. असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण करने हेतु न्यूनतम प्रतिनिधिक निर्यात सौदों पर भरोसा किया गया है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए सहयोगी निर्यातकों को अनुमत समायोजनों को समायोजित किया गया है।

पाटन मार्जिन

24. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर सहयोगी और असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका के अनुसार किया गया है :-

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य- बल्क (एनटीडी/ एम टी)	सामान्य मूल्य- डिब्बा बंद (एनटीडी/ एम टी)	निर्यात कीमत बल्क (एनटीडी/एम टी)	निर्यात कीमत- डिब्बा बंद (एनटीडी/ एम टी)	पाटन मार्जिन- बल्क (एनटीडी/एम टी)	पाटन मार्जिन- डिब्बाबंद (एनटीडी/ एम टी)	पाटन मार्जिन- भारत औसत (एनटीडी/ए म टी)	निवल निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में पाटन मार्जिन
चीनी ताइपेई								
मै. फार्मासा	***	***	***	***	***	***	***	(0-5)
कैमिकल्स								%
मै. ताइवान प्रोस्पेरिटी	***	***	***	***	***	***	***	(0-5)
								%
असहयोगी निर्यातक	***	***	***	***	***	***	***	1-6
								%

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

25. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को नोट किया है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।"
26. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है : "संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, राजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"
27. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों और तथ्यों को ध्यान में रखते हुए क्षति मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है। क्षति मापदंडों का विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने वाली मै. एच ओ सी एल के लेखापरीक्षित तुलन पत्र सहित समस्त संगत दस्तावेजों की प्राधिकारी ने जांच कर उसका सत्यापन किया है। भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दों पर प्राधिकारी ने समुचित शीर्षों में कार्रवाई की है।
28. वर्तमान जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि कच्ची सामग्री की कीमत में भारी परिवर्तन हुआ है और परिणामतः माह दर माह आधार पर घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति, लाभप्रदता में परिवर्तन आया है। यह भी तर्क दिया गया है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य में माह दर माह आधार पर अंतर आया है। अतः हितबद्ध पक्षकारों ने जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत, क्षति रहित कीमत, निवल बिक्री प्राप्ति तथा संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य का माहवार विश्लेषण करने की इच्छा व्यक्त की है। अतः समस्त हितबद्ध पक्षकारों ने माह दर माह आधार पर संगत आंकड़े उपलब्ध करने का अनुरोध किया था। तदनुसार प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान क्षति रहित कीमत, निवल

बिक्री प्राप्ति और घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की गणना माह दर माह आधार पर की है । प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से लगातार अधिक रही है । अतः घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान काफी अधिक लाभ कमाया है ।

मांग, आयात तथा घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

मांग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
घरेलू उद्योग बिक्री	मी.ट.	26,615	26,007	22,658	26,351
अन्य घरेलू उत्पादक	मी.ट.	12234	14252	20860	12000
ताईवान	मी.ट.	12,567	9,549	13,384	21,126
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	मी.ट.	51,298	54,525	72,934	75,277
अन्य देश	मी.ट.	7,578	2,972	7,535	6,799
		1,10,292	1,07,305	1,37,371	1,41,553
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	24.13%	24.24%	16.49%	18.62%
अन्य घरेलू उत्पादक	%	11.09%	13.28%	15.19%	8.48%
संबद्ध देश	%	11.39%	8.90%	9.74%	14.92%
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	%	46.51%	50.81%	53.09%	53.18%
अन्य देश	%	6.87%	2.77%	5.49%	4.80%

29. प्राधिकारी ने आयातों की मात्रा की गणना करने के लिए आई बी आई एस के आंकड़ों पर भरोसा किया है क्योंकि इनमें डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों की तुलना में अधिक आंकड़े दर्शाए गए हैं । उपर्युक्त से प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

क. संबद्ध वस्तु की मांग का निर्धारण घरेलू बिक्री और सभी देशों से हुए आयातों को जोड़कर किया गया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2008-09 में संबद्ध वस्तु की मांग घटी है परंतु इसके बाद उसमें वृद्धि देखी गई है ।

ख. वर्ष 2008-09 में संबद्ध देश से आयातों का बाजार हिस्सा घटा है और उसके बाद उसमें वृद्धि देखी गई है तथा पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें भारी वृद्धि हुई है ।

ग. जिन अन्य देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है उनके बाजार हिस्से में वृद्धि प्रदर्शित हुई ।

घ. वर्ष 2007-08 और 2008-09 के दौरान मांग में वृद्धि के अनुरूप घरेलू उद्योग का हिस्सा स्थिर था परंतु वर्ष 2009-10 और जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई ।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

30. नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेखानुसार, कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी ने इस बात पर विचार किया है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में भारी कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में इतनी अधिक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी अधिक वृद्धि हो गई होती ।

31. संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत हास और कीमत न्यूनीकरण यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है । इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है ।

पाटित आयातों का कीमत हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव:

32. पाटित आयातों के कीमत हासकारी और कीमत न्यूनकारी प्रभाव की जांच भी उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य के संदर्भ में की गई है ।

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	107	107
वृद्धि (पूर्ववर्ती वर्ष में कमी)			11.16%	(3.30%)	(0.83%)
बिक्री कीमत (एनएस)	रु./मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	101	107
वृद्धि (पूर्ववर्ती वर्ष में कमी)			4.54%	(3.39)%	5.55%

33. जांच के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि वर्ष 2008-09 में घरेलू उद्योग बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप बिक्री कीमत को बढ़ाने में समर्थ नहीं था, तथापि, जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में मामूली गिरावट के बावजूद बिक्री कीमत में वृद्धि हुई अर्थात् जांच अवधि के दौरान कीमत में कोई हास/न्यूनीकरण नहीं देखा गया है ।

कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव**कीमत कटौती**

34. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की गणना करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित रिबेट, छूट और कमीशन तथा प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की कटौती की गई है। आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% उतराई प्रभार तथा लागू मूल सीमाशुल्क और शिक्षा उपकर को प्रत्येक प्रतिवादी निर्यातक द्वारा सूचित संबद्ध देश से हुए निर्यात/सीआईएफ कीमत में जोड़कर की गई है। अन्य श्रेणी के लिए पहुंच कीमत की गणना लागू मूल सीमाशुल्क और शिक्षा शुल्क को आई बी आई एस आंकड़ों के अनुसार निर्धारणीय मूल्य में जोड़कर की गई है।

क्षति अवधि के दौरान समग्र संबद्ध देश के लिए

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
पहुंच कीमत	रु./मी.ट.	...			
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./मी.ट.	...			
कीमत कटौती	रु./मी.ट.	...			
निवल बिक्री प्राप्ति के प्रतिशत के रूप में कीमत कटौती	%	5-10%	10-15%	5-10%	5-10%

35. यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तु के आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिसके परिणामस्वरूप कीमत कटौती हुई है। तथ्य, निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना में पहुंच मूल्य का आगे विश्लेषण किया गया है।

कम कीमत पर बिक्री

36. कम कीमत पर बिक्री के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है। इससे पता चलता है कि जांच अवधि में कम कीमत पर बिक्री नकारात्मक थी।

	इकाई	जांच अवधि
पहुंच कीमत	रु./मी.ट.	...
क्षति रहित कीमत	रु./मी.ट.	
कीमत कटौती	रु./मी.ट.	
निवल बिक्री प्राप्ति के प्रतिशत के रूप में कीमत कटौती	%	(5-10) %

घरेलू उद्योग के अन्य आर्थिक मापदंडों की जांच**घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग**

	इकाई	2007-	2008-	2009-10	जांच अवधि
स्थापित क्षमता	मी.ट.	24,640	24,640	24,640	24,640
उत्पादन	मी.ट.	26,137	26,544	23,084	26,973
क्षमता उपयोग	%	106%	108%	94%	109%

37. क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग के बारे में घरेलू उद्योग के आंकड़ों से यह पता चलता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता 24640 मी.ट. पर अपरिवर्तित रही है। संबद्ध वस्तु के उत्पादन में 2008-09 तक वृद्धि हो रही थी उसमें 2009-10 में गिरावट आई जिसके बाद वृद्धि देखी गई थी। अतः घरेलू उद्योग 2009-10 को छोड़कर संपूर्ण स्तर से अधिक क्षमता का उपयोग करने में समर्थ था।

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
बिक्री	मी.ट.	26,615	26,007	22,658	26,351
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	85	99

38. घरेलू उद्योग की बिक्री से संबंधित उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि बिक्री में उत्पादन जैसी प्रवृत्ति रही है। बिक्री में केवल 2009-10 में कमी आई थी।

मालसूची

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक	मी.ट.	655	176	713	471
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	176	713	1,140	1,093
औरात स्टॉक	मी.ट.	416	445	927	782
बिक्री दिवसों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक	संख्या	4.68	5.13	12.27	8.90

39. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान औसत मालसूची स्तर में वृद्धि हुई है।

40. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव और आयात की मात्रा और मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री तथा पूर्ववर्ती खंड में विभिन्न क्षेत्रों के बाजार हिस्सों के साथ मांग की पद्धति जैसे प्रमुख क्षति

संकेतकों का विश्लेषण करने के बाद ऐसे अन्य आर्थिक मापदंडों का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है :

लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	107	108
बिक्री कीमत (एन एस आर)	रु./मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	101	107
लाभ/हानि	रु./मी.ट.				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	56	107
कर पूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	57	47	105
पी बी आई टी	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62	54	105
नकद लाग	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	59	49	103

41. प्राधिकारी गोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है ।

निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
पी बी आई टी	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	62.88	54.24	104.74
निर्गत स्थायी सम्पत्ति	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	106.57	102.47	102.47
कार्यशील पूंजी	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	118.36	100.50	92.00
नियोजित पूंजी	लाख रुपए				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	114.61	101.13	95.33
नियोजित पूंजी पर आय	%	57%	31%	30%	62%
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	54.86	53.63	109.87

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई पूंजी पर अर्जित आय में भी लाभप्रदता के रूप में विचार हुआ है।

रोजगार और मजदूरी

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
रोजगार (मानव शक्ति)	सं.	350	330	330	381
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	94.29	94.29	108.86
मजदूरी	लाख रूपए	591.38	454.91	454.91	514.47
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	76.92	76.92	86.99

43. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान जनशक्ति में वृद्धि हुई है।

उत्पादकता

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	74.68	80.44	69.95	70.79
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	107.71	93.67	94.80

44. जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में गिरावट आई है क्योंकि जनशक्ति में वृद्धि हुई है और क्षमता में कोई वृद्धि नहीं पाई गई है।

वृद्धि

45. क्षति अवधि में क्षमता उपयोग ईष्टतम रहा है। लाभप्रदता में पर्याप्त सुधार हुआ है। कीमत में कोई हास नहीं देखा गया था।

निवेश

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक संबद्ध वस्तु की क्षमता में परिवर्तन नहीं किया था। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने कोई नया निवेश नहीं किया है। प्राधिकारी की जानकारी में आगे निवेश करने की किसी योजना का कोई साक्ष्य नहीं आया है।

पाटन की मात्रा

47. जैसी कि संगत खंड में चर्चा की गई है, सहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन नकारात्मक पाया गया है परंतु असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक है लेकिन संबद्ध वस्तु के पाटन पर तब तक कार्यवाही नहीं की जा सकती जब तक कि उससे घरेलू उद्योग की क्षति न पहुंचती हो और आगे यह भी पाया गया है कि सहयोगी और असहयोगी दोनों निर्यातकों के लिए क्षति मार्जिन नकारात्मक है।

48. जांच अवधि के दौरान सहयोगी उत्पादक और निर्यातक के संबंध में कीमत संबंधी

क्षति का निम्नानुसार अवलोकन किया जा सकता है:

उत्पादक	निर्यातक	घ.उ. की निवल बिक्री कीमत (रु./मी.ट.)	पहुंच मूल्य (रु./मी.ट.)	क्षति मार्जिन (रु./मी.ट.)	एन आई पी के (%) के रूप में क्षति मार्जिन
मै. ताइवान प्रोसपेरिटी कैमिकल लि.	मै. ताइवान प्रोसपेरिटी कैमिकल लि.				(0-5)%
मै. फार्मोसा कैमिकल लि.	मै. फार्मोसा कैमिकल लि.				(15-20)%
चीनी ताइपेई से अन्य सभी निर्यातक	चीनी ताइपेई से अन्य सभी निर्यातक				(5-10)%

कारणात्मक संबंध

49. कारणात्मक संबंध के मुद्दे के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध की जांच की गई है । घरेलू उद्योग को हुई क्षति तथा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति और पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध से जुड़े मुद्दों के बारे में विस्तृत जांच की गई थी । पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- II (V) निम्नानुसार है :-

" यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है; जैसा कि उपर्युक्त पैराग्राफ (ii) तथा (iv) में उल्लेख किया गया है । पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष सुसंगत साक्ष्य की जांच पर आधारित होगा । इसके साथ ही निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों से इतर अन्य ज्ञात कारकों जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है, की भी जांच करेंगे और इन कारकों से हुई क्षति को पाटित आयातों का कारण नहीं माना जाएगा । इस संबंध में जो कारक प्रासंगिक हो सकते हैं, उनमें अन्य बातों के साथ-साथ आयातों की मात्रा एवं कीमतें; जिन्हें पाटित कीमतों पर नहीं बेचा गया, मांग में संकुचन अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी का विकास एवं घरेलू उद्योग का निर्यात कार्यनिष्पादन एवं उत्पादकता शामिल हैं ।"

मांग में कमी

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि हुई है । अतः मांग में संभावित कमी के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती ।

खपत की पद्धति में परिवर्तन

51. विचाराधीन उत्पाद के बारे में खपत की पद्धति में न तो कोई परिवर्तन हुआ है और

न ही इस बारे में किसी भी हितवद्ध पक्षकार ने कोई पुष्टिकृत अनुरोध किया है। अब तक की गई जांच से वैकल्पिक प्रतिस्पर्धी उत्पादों की मौजूदगी और ऐसे वैकल्पिक उत्पादों के कारण हो रही संभावित क्षति की मौजूदगी का पता नहीं चला है।

विदेशी और घरेलू उत्पादों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

52. अधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का एक ही ऐसा बाजार है जहां चीनी टाईपेई से हुए पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त संबद्ध वस्तु से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं और इनका उपयोग समान अनुपयोगों/अंतिम प्रयोगों में किया जाता है। विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहारों और उनके बीच प्रतिस्पर्धा का कोई ऐसा साक्ष्य नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होती हो।

प्रौद्योगिकी विकास

53. प्रौद्योगिकी विकास का कोई आरोप नहीं है और न ही अब तक हुई जांच से यह पता चला है कि घरेलू उद्योग को संभावित क्षति प्रौद्योगिकी विकास के कारण हो सकती है।

निर्यात निष्पादन

54. घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है। बहरहाल प्राधिकारी ने अपने विश्लेषण में केवल घरेलू प्रचालनों और घरेलू लाभप्रदता पर विचार किया है।

घरेलू उद्योग की लाभप्रदता

55. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान श्रमिक उत्पादन तथा दैनिक उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि प्रदर्शित हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पादन और बिक्री में वृद्धि के साथ-साथ समूची क्षति अवधि में लाभप्रदता में वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

56. अधिकारी ने घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया है। क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु घरेलू उद्योग की इस क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। क्षति मार्जिन का निर्धारण उचित शीर्ष में उल्लिखित पाटन मार्जिन के निर्धारण के अनुरूप किया गया है। इस प्रकार निकाला गया क्षति मार्जिन नकारात्मक पाया गया है।

शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना,**घरेलू उद्योग के अनुरोध**

57. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

क. समूची बाजार स्थिति नितांत अस्थायी है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह प्रदर्शित करने के लिए कोई दस्तावेज नहीं दिया है कि जांच अवधि में परिवर्तन स्थायी स्वरूप का है।

ख. मात्र यह तर्क पर्याप्त नहीं है कि वर्तमान में कोई पाटन और कोई क्षति नहीं हो रही है।

आवेदक निर्यातक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

58. निर्यातकों ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं:

क. भारत और विश्व में ऐसीटोन की कीमत में वृद्धि हुई है। भारत तथा अन्य देशों के लिए ताईवान से ऐसीटोन की कीमत में 2 से अधिक वर्षों (अक्टूबर, 2009 से अक्टूबर, 2011) से लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसीटोन के संबंध में कीमत वृद्धि न केवल स्थिर और पुख्ता है अपितु, दो से अधिक वर्षों से स्थिर भी है।

ख. मध्यावधि समीक्षा की जांचोत्तर अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा लागत में वृद्धि से अधिक ऐसीटोन की कीमत में वृद्धि की जा रही है। घरेलू उद्योग भारी मुनाफा कमा रहा है और वह वर्तमान कीमत पर 100% से अधिक आर ओ सी ई प्राप्त करने में समर्थ है। घरेलू उद्योग ने बल्क ऐसीटोन की कीमत में वृद्धि की है जिससे स्पष्टतः यह पता चलता है कि कीमत में वह वृद्धि स्थायी, पुख्ता, सतत, निरंतर और स्थायी स्वरूप की है।

ग. ताईवान से ऐसीटोन के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को कोई क्षति होने की संभावना नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

59. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की जांच की है। प्राधिकारी ने जांच अवधि और जांच अवधि से तत्काल पूर्व की परवर्ती अवधि के लिए भारत को चीनी ताईपेयी से हुए संबद्ध वस्तु के निर्यातों और तीसरे देशों को हुए निर्यात के बारे में सहयोगी निर्यातकों से अतिरिक्त सूचना मांगी थी ताकि नियम 23 के अंतर्गत अधिदेशित क्षति की संभावना के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की जा सके। इस संबंध में प्राधिकारी निम्नानुसार नोट करते हैं:

क. जांचोत्तर अवधि में निर्यातों की मात्रा:-संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने जांचोत्तर अवधि के दौरान भी संबद्ध देश से भारत और तीसरे देशों को हुए संबद्ध वस्तु के निर्यातों की मात्रा का मासिक विश्लेषण किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि

अक्टूबर, 2010 से सितंबर, 2011 की अवधि के दौरान भारत और अन्य देशों को चीनी टाईपेई से निर्यातों की मात्रा क्रमशः 24512 मी.ट. एवं 231647 मी.ट. रही थी। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से निर्यात की मात्रा 21126 मी.ट. रही थी। आंकड़ों के अवलोकन से जांचोत्तर अवधि में संबद्ध देश से निर्यात मात्रा में ऐसी किसी पर्याप्त वृद्धि का पता नहीं चलता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होती हो। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग अपनी स्थापित क्षमता का उपयोग करने में समर्थ रहा है और इसलिए इस वजह से क्षति की संभावना का कोई मामला प्रतीत नहीं होता है।

ख. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता : पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने जांचोत्तर अवधि में उत्पादन लागत का तिमाहीवार विश्लेषण भी किया है। जांचोत्तर अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति और लाभप्रदता की जांच की गई है। विश्लेषण से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की बिक्री पर लगातार भारी मुनाफा कमाया है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति तदनुरूपी तिमाहियों के लिए घरेलू उद्योग द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत से काफी अधिक पायी गई थी। अतः जांचोत्तर अवधि में कम कीमत पर बिक्री का कोई साक्ष्य नहीं पाया गया है।

ग. आयातों का पहुंच मूल्य, निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत : जांचोत्तर अवधि में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना में संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य का विश्लेषण भी किया है। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य सामान्यतः घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम रहा है। लेकिन आगे यह नोट किया गया था कि आयातों का पहुंच मूल्य तदनुरूपी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी अधिक रहा था। अतः जांचोत्तर अवधि में पहुंच मूल्य के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति होने की संभावना नहीं है। वस्तुतः जांचोत्तर अवधि में क्षति मार्जिन लगातार नकारात्मक रहा था।

घ. संबद्ध देश से तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु की निर्यात कीमत : घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध देश भारत के लिए निर्यात कीमत से कम कीमत पर तीसरे देशों को संबद्ध वस्तु की बिक्री कर रहा है। अतः पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए कजाने की स्थिति में संबद्ध देश द्वारा भारत को अपने निर्यात भेजे जाने की संभावना है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होगी। इस संबंध में प्राधिकारी ने भारत को हुए निर्यातों की तुलना में संबद्ध देश से तीसरे देशों को हुए निर्यात के पहुंच मूल्य का माहवार विश्लेषण किया है। यह नोट किया जाता है कि भारत को हुए निर्यातों के पहुंच मूल्य की तुलना में तीसरे देशों से निर्यातों का माहवार पहुंच मूल्य सामान्यतः अधिक है। इससे आगे यह पता चलता है कि यह मानते हुए भी कि शुल्क की समाप्ति के बाद संबद्ध देश से कुछ आयात भारत को होंगे, इस बात की संभावना नहीं है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

निष्कर्ष

60. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों अथवा इन जांच परिणामों में अन्यथा दर्ज तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एवं उपलब्ध विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि :
- i. भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु उस कीमत पर आ रही है जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हो रही है ।
 - ii. घरेलू उद्योग के निष्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात के कारण इस पर प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है ।
 - iii. पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आने की संभावना नहीं है
 - iv. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस आशय की प्राप्त सूचना से संतुष्ट हैं कि पाटनरोधी शुल्क को निरंतर जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है ।

सिफारिशें

61. यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि वर्तमान उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पहुंचाने वाली और क्षति पहुंचाने की संभावना वाली कीमत पर संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में प्रवेश करने की संभावना नहीं है और यह कि घरेलू उद्योग की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण उस पर प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है । उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी प्राप्त सूचना के आधार पर इस बात से संतुष्ट हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगातार लागू रखने का कोई औचित्य नहीं है और इसलिए वह उसे समाप्त करने की सिफारिश करते हैं ।
62. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 10th April, 2012

Final Findings

Subject : Mid-Term Review investigation in respect of the anti-dumping duties imposed on imports of 'Acetone' originating in or exported from Chinese Taipei.

No. 15/2/2011-DGAD.—Whereas the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter referred to as the AD Rules); recommended, *inter alia*, imposition of Anti Dumping duty on the imports of 'Acetone' (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from Chinese Taipei (hereinafter also referred to as the subject country) falling under Sub-heading 2914.11 of ITCHS. The final findings were notified vide Notification No 14/4/2006-DGAD dated 4th January, 2008 and definitive anti dumping duty was imposed vide Notification No. 33/2008-Customs dated 11th March, 2008.

2. The Authority received a duly substantiated application from M/s Formosa Chemical & Fibre Corporation, Chinese Taipei requesting the Authority to undertake a Mid-Term Review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Chinese Taipei. The Applicant, *inter alia*, listed the following grounds for undertaking the mid-term review:

- That basic Raw Materials (viz. Benzene and Propylene) prices have significantly increased during the period of investigation as compared to the POI of the original investigation.
- There is significant increase in export price of subject goods to India as compared to the original investigation in respect of exports from Chinese Taipei. Same trend has been noticed in respect of export price to other countries from Chinese Taipei.
- Negative Dumping Margin has been claimed by the applicant during the period of investigation.

- There is a change in methodology of computation of Normal Value based on amendment in the Act.
- Domestic sales price in India has also shown significant increase as compared to the original investigation.

Whereupon, the Authority considered that changes in the circumstances as enunciated above necessitate initiation of a mid-term review.

3. Having satisfied itself that the applicant has produced sufficient positive information substantiating the need for a review, the Authority initiated the mid-term review investigation of anti-dumping duty imposed on imports of the subject goods originating in or exported from the subject country vide Notification No. 15/2/2011-DGAD dated 15th April, 2011 in accordance with Section 9A (5) of the Act, read with Rule 23 of the AD Rules.

B. PROCEDURE

4. In these proceedings the procedure described below has been followed:
 - i. The Economic & Cultural Centre of the subject country in India were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.
 - ii. The Authority sent copies of initiation notification dated 15th April, 2011 to the Economic & Cultural Centre of the subject country in India, known exporters from the subject country, known importers and other interested parties, and the domestic producers, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file the questionnaires' responses and make their views known in writing within the prescribed time limit. Copies of the letter and questionnaires sent to the exporters were also sent to the Economic & Cultural Centre of the subject country along with a list of known exporters / producers with a request to advise the exporters/ producers from the subject country to respond to the questionnaires within the prescribed time.
 - iii. Copy of the non-confidential version of the application filed on behalf of the applicant was made available to the known exporters, domestic producers and the Economic & Cultural Centre of the subject country in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules.
 - iv. Questionnaires were sent to the following known exporters from the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information:

S.N.	Company's Name
1.	Taiwan Prosperity Chemical Corporation, Floor:9, No.113, Chung Shan N. Road Sec.2, Taipei, 104, Taiwan
2.	Chang Chun Plastic Co. Ltd. 7 th Floor, No.301, Song kiang Road, Taipei, 104, Taiwan.

In response to the notification, M/s FCFC and Taiwan Prosperity Chemical Corporation have filed their questionnaire responses. Barring these two companies, no other exporter has responded to the questionnaires in response to the above notification.

- v. Questionnaires were sent to the following known domestic producers, importers and users of the subject goods in India for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Company's Name
1.	M/s Schenectady Herdillia Ltd, Air India Building, Nariman Point, Mumbai-400 021
2.	M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd. Rasayani Tal, Panvel, District: Raigad, Maharashtra 410207
3.	M/s Kundan Group, Kundan House, D-17, Central Market, Prashant Vihar, Delhi-110085
4.	M/s Akin Chemcials Put Lt, Jash Chambers, 5th Floor, Sir PM Road, Fort, Mumbai-400 021
5.	M/s Pon Pur Chem, Plot No.14, Room No.5, 1st Floor, Popular Plaza, Gandhidham-370207
6.	M/s SI Group India Limited, Opp. Jui Nagar Railway Station, Thane Belapur Road, Turbhe, Navi Mumbai Maharashtra-400 705
7.	M/s Prasol Chemicals Ltd, Prasol House, Plot No.A-17/2/3, TTC Industrial Area, Khairne MIDC, Navi Mumbai-400 710
8.	M/s Ketul Enterprises, Plot No.14/15, Sector 1/A, 2nd Floor, Room No.15, , Sector 1/A, 2nd Floor, Popular Plaza, Gandhidham, Gujarat
9.	M/s Sonakamal Enterprises Pvt. Ltd, 602, Sunil Enclave, 6th Floor, Periera Hill Road, Off. Andheri Kurla Road, Andheri East, Mumbai-400 099
10.	M/s Apra Enterprises, 1, Sai Chambers, 2nd Floor 365, Narsi Natha Street, Katha Bazar, Mumbai-400 009
11.	M/s Pioneer Chemical Industries, Plot No.28, Sector:9, Shop No.7, Jai Ambe Chambers, Gandhidham Gujarat370201
12.	M/s Sanjay Chemicals I Pvt. Ltd, Office No.5, 1st Floor, Saraswati Building Plot ;No.501, Ward 12C. Gandhidham (Kutch), Gujarat
13.	M/s Ramesh Kumar & Co.-201/203 Prathmesh, 2nd Floor, Raghuvanshi Mill Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai-400 013

In response to the above notification, no importer/ user have filed its questionnaire' response. Out of the domestic producers, M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd has filed its submissions along with injury related information/data.

- vi. The imports data for the period of investigation and preceding three years was called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S).
- vii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- viii. As stated, the application for mid-term review was filed by M/s Formosa Chemical & Fibre Corporation, Chinese Taipei requesting the Authority to undertake a Mid-Term Review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Chinese Taipei. In response to the initiation notification M/s Hindustan Organics Ltd, Kochi has submitted the information/data for undertaking injury analysis. The Authority has examined the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to analyze the injury suffered and to work out the cost of production, cost to make and sell the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- ix. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 25th July 2011. The parties, which presented their views in the public hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally. The arguments made in the written submissions/rejoinders received from the interested parties have been considered, wherever found relevant, in these findings.
- x. The period of investigation for purposes of the present review is 1st October 2009 to 30th September 2010 (12 months). However, injury analysis shall cover the years 2007-08, 2008-09, 2009-10 and the POI.
- xi. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xii. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded the Discourse statement on the basis of the 'facts available'.
- xiii. *** In this statement represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

C. Submissions made by the interested parties in response to the Disclosure statement and examination thereof by the Authority

5. The following submissions have been made on behalf of the domestic industry in response to the Disclosure statement:
- The responding exporters have given no material to the Authority to determine likelihood of dumping.
 - The Authority has ignored the current situation of the product, which clearly shows that the domestic industry is once again facing financial losses.
 - Fair comparison principles have been ignored in determining injury margin:
 - (i) Freight cost of the domestic industry has been completely ignored while comparing the domestic industry price with landed price of imports.
 - (ii) The non injurious price determined is without considering the discounts and commission paid by the domestic industry. Just opposite, the discounts & commissions paid by the exporters have been included in landed price of imports.
 - (iii) The authority has deducted export price for the credit cost only for the purpose of determining dumping margin. However, the approach has not been followed for determining injury margin. Since cash discounts of the domestic industry have been excluded, the credit cost incurred by the exporter should also be excluded both for determining dumping margin and injury margin.
 - (iv) Since non injurious price has been determined at ex-factory level, the export price for the purpose of injury margin should also be considered on ex-factory level. There is no legal prescription that the landed price of imports should include the freight cost incurred by the exporter.
 - Non injurious price arguments of the domestic industry have been ignored. It has contended that:
 - (v) Net fixed assets cannot form the basis for determination of profits when the original acetone plant setup by the domestic industry is already fully depreciated.
 - (vi) The rules do not prescribe the quantum of reasonable profits that the Designated Authority should consider. Given the high age of the plant, the Designated Authority should consider higher rate of return for the domestic industry. It is without any rationality to grant 22% return to a brand new investment and 22% return on 20-50 years old investments.
 - (vii) Further, the domestic industry notes that the present law itself is against the basic right of domestic industry to seek protection against unfair dumped imports. The domestic industry submits that the determination of non injurious price is inappropriate and is leading to unduly low protection to the domestic industry. Followings are relevant in this regard
 - It has been contended that the Authority is required to consider actual raw material and utilities consumption. Further, it would be inappropriate to ignore actual production and adopt any other production basis for determination of non injurious price. Besides, the capital employed should be determined considering

present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets and that adoption of net fixed assets is highly inappropriate, considering that some of the investments are significantly old and therefore net fixed assets does not represent true value of investments. In fact, the most appropriate value for the purpose is present value of the investments.

- It has been contended that the no likelihood of dumping has been determined.
- All relevant factors for likelihood of injury have not been considered.
- The difference between non injurious price and net sales realization is immaterial in a midterm review investigations.

Examination by the Authority

6. The Authority has examined the issues raised by the interested parties in response to the Disclosure statement as follows:
 - The Authority notes that it has duly examined whether the continued imposition of the anti-dumping duty in the instant matter is necessary to offset dumping and whether the injury would be likely to continue or recur if the duty were removed or varied or both; as may be evident from the relevant sections of these findings.
 - As regards, the current situation of the product; the Authority examined and evaluated the information/data not only with reference to the period of investigation but has also analysed the post POI information/data for assessing recurrence of injury claims and arriving at its conclusions.
 - As regards the contention that fair comparison principles have been ignored in determining injury margin; the Authority notes that the contention is devoid of any substance as the Authority has undertaken the comparison as per its well established practice of comparing the NIP with the respective Landed values of the subject goods in question.
 - As regards the contention that Non-injurious price arguments of the domestic industry have been ignored; the Authority reiterates that it has computed the NIP strictly in terms of the AD Rules on the subject.
 - The Authority notes that all relevant factors for likelihood of injury have been considered as would be evident from the relevant sections of these findings.
 - The Authority further does not concur with the view that the difference between non injurious price and net sales realization is immaterial in a mid-term review investigation.

D. Submissions made by the domestic industry

7. The following submissions, in brief, have been made on behalf of the domestic industry:

- In a mid-term review, current performance alone is insufficient to conclude whether the anti dumping duty can be withdrawn at this stage. The Authority is required to consider the likely situation when anti dumping duty is withdrawn. An interested party needs to establish that the circumstances on the basis of which the duty has been imposed have changed so materially that the duty is required to be revoked at premature stage or quantum of duty needs to be modified. The exporter has only claimed that the dumping margin and injury margin have changed so significantly that a review is called for, however they have not claimed that dumping and consequent injury is unlikely in the event of revocation of anti dumping duties hence, there is no justification of the present initiation of the investigation.
- Mid-term review investigation is restricted to the changed circumstances that have been alleged by the applicant in the application as has also been held by the Supreme Court in the matter of Rishiroop Polymers Pvt. Ltd. vs. Designated Authority & Addl. Secretary. The onus of establishing that there is a need for modification or withdrawal of antidumping duty in force lies on the petitioner and not on the domestic industry which is also established by the Guidelines for Preparing an Application for Review of Anti-Dumping Duties, wherein it is stated that the onus is upon the applicant to demonstrate that a Mid-Term review is required to review the need for continued imposition of duty. "No dumping" by the exporter in question is not sufficient for withdrawal of the duty. The exporter must show that circumstances on the basis of which measures were established have materially changed and that these changes are of a lasting nature as has also been held by the WTO in US Drams Case
- In a mid-term review investigation the exporter is required to establish that there is no dumping and there is no likelihood of dumping of the product in the event of modification or withdrawn of anti dumping duties. It is not even the claim of the exporter that it is unlikely that the dumping would continue or recur if the duties were modified or withdrawn. Nor there is any positive evidence provided in this regard. The imports from Taiwan have increased over the period of times. The export prices are lower than the NIP leading to price underselling. These factors show that revocation of duty will aggravate the injury caused to the domestic industry.
- The non injurious price is required to be determined considering gross fixed assets at current market values. The original plant of the domestic industry is already fully depreciated and it should not be expected that the domestic industry should "earn no profits" merely because the investments are fully depreciated in the books. The non injurious price should include the Indian freight from factory to extended warehouse within the country, end period quantity discounts and cash discounts.
- Information regarding installed capacity, production and sales has been claimed as confidential, indexed version of the comparison of normal value, export price and dumping margin is not disclosed, no evidence is enclosed for supporting the prices claimed for raw material propylene.
- Determination of dumping margin and injury margin thereof should be done on monthly based analysis, as the price of the raw material changes substantially on monthly basis making it difficult to show the actual fluctuations in the dumping margin.

- There is no legal requirement that the companies who had participated earlier should participate now.
- There is no mandatory requirement for providing injury data in a mid-term review. Further, assuming though not admitting that domestic industry has not suffered injury during the current period, the same is grossly insufficient in withdrawing the current Anti-dumping duties. The applicant/exporter must establish that dumping and consequent injury is unlikely in the event of premature withdrawal of Anti-dumping duties.
- Claim of increase in prices of raw materials being far less than the increase in exports and domestic price is wrong as net sales realization of one year cannot be compared with list price of different period. Only net sales realization is relevant for the purpose of anti-dumping investigations as the list prices are only indicative of the maximum price at which the party is willing to supply the material.
- Demand-supply gap is wholly immaterial for the present purpose. The export volumes have gone up only because the foreign producers have absorbed the anti-dumping duties wherever imposed and not because of the demand supply gap.
- Mere change in methodology for determination of normal value cannot establish "no likelihood of dumping and consequent injury".
- Exports of Taiwan to third countries were at materially dumped prices. The injury margin in respect of imports from Taiwan as also third country is positive. The export price after the investigation period is lower than export price in the investigation period.
- Reliance on the Final Findings of the Designated Authority in the matter of HF Acid is highly misplaced for the reasons that the Authority found in that case that there was contradictory evidence with regard to likelihood of injury.
- In a situation where the majority assets are at their nominal book value, 22% return on net fixed assets implies no profit to the domestic industry. Therefore, higher rate of return must be provided. The present methodology shall not provide any return to the domestic industry, if the capital employed is defined as net fixed asset plus working capital and reasonable return is kept at 22%. In 1986, the net fixed asset of the domestic industry was significantly higher than the net fixed asset at present and even if that level of profit is allowed, as per the claim of the exporter, the profit entitlement of the domestic industry shall be far higher. The law only prohibits consideration of gross fixed assets and revaluation of assets. Rules do not provide that such net fixed asset should be considered at their book value and not at their market value. Further, the law does not provide anything with regard the level of reasonable profit that the domestic industry should earn. As the age of the plant increases, the rate of return that the domestic industry should be provided should also increase. The definition of capital employed in accounting parlance is of no consequences, particularly when the same supersedes or overwrites the very objective of the law. If capital employed is determined considering net fixed asset it will imply that the domestic industry should earn no profits only because its plants are old.

Submissions made by the Co-operative exporters

8. The following submissions, in brief, have been made on behalf of the Co-operative exporters:

- Increase in prices of raw materials to manufacture Acetone is far less than the increase in prices of Acetone in India and globally during the period of investigation of the Mid-term Review investigation.
- Globally prices of Acetone have increased. With overall increase in prices of Acetone the Domestic Industry is making bumper profits.
- Trends of increase in prices of Acetone in India are showing upward trends even after the period of investigation of the Mid-term Review investigation.
- Exports from Taiwan are entering Indian at un-dumped prices.
- Exports from Taiwan are showing upward trends after the period of investigation of the Mid-term Review investigation.
- Existing Anti Dumping Duty on Acetone from Taiwan is not warranted and should be removed immediately. There is no likelihood that injury will recur or continue if the Anti Dumping Duty is modified or removed.
- Both TPCC and FCFC are operating at 100% capacity utilization and in absence of surplus capacity available there is no likelihood that the subject goods will be dumped if the existing Anti Dumping Duty on Acetone from Taiwan is removed.
- Acetone exported from Taiwan is neither undercutting nor underselling the prices and Non-injurious Price of the Domestic Industry. In an event there is no price undercutting and underselling there is no justification for continued imposition of the Anti Dumping Duty.
- Providing 22% ROCE on Capital Employed is totally illogical and should be reviewed.

Examination by the Authority

9. The Authority has examined the issues raised by the interested parties as follows:
 - It has been contended on behalf of the domestic industry that in a mid-term review, current performance alone is insufficient to conclude whether the anti-dumping duty can be withdrawn at this stage and that the Authority is required to consider the likely situation when anti dumping duty is withdrawn; the Authority notes that Rule 23 of the AD Rules obligates the Authority to review the need for the continued imposition of any anti-dumping duty, *inter alia*, upon request by any interested party who submits positive information substantiating the need for such review and a reasonable period of time has elapsed since the imposition of the definitive anti-dumping duty and upon such review, the Authority shall recommend to the Central Government for its withdrawal, where it comes to the conclusion that the injury to the domestic industry is not likely to continue or recur if the said anti-dumping duty is removed or varied and is therefore no longer warranted. In this case, a duly substantiated application was received from a Chinese Taipei exporter/producer.

- As regards the initiation of this Mid-term review investigation, the Authority notes that the applicant exporter/producer from Chinese Taipei had *prima facie* established a case that circumstances have materially changed over time whereby the desirability of the anti-dumping duty imposed on the subject goods needs to be relooked into. It is true that the imports from Chinese Taipei have increased over the period of times but it is also true that these imports are significantly at a price that does not and also not likely to cause any material injury to the domestic industry. The landed values are significantly higher than the NIP determined resulting into a negative price underselling. A similar trend is seen in the quarterly periods immediately following the POI. It is further noted that the domestic industry has been consistently realising a higher net sales realisation *vis a vis* the non-injurious price, despite the increase in imports from the subject country. Neither the adverse price impact nor any adverse volume impact on account of the imports of the subject goods on domestic industry has been observed.
- As regards the determination of non-injurious price is concerned: the Authority notes that it has determined the NIP as per the relevant AD Rules on the subject.
- As regards the contention that the determination of dumping margin and injury margin should be done on month-based analysis, as the price of the raw material changed significantly; the Authority notes that concurring with the submission, it has undertaken the dumping margin and injury margin analysis on month-wise basis only.
- As regards the issues relating to confidentiality; the Authority notes that information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- As regards the contention that there is no mandatory requirement for providing injury data in a mid-term review on the part of the domestic industry; the Authority strongly disagrees with such a view. Each interested party in an Anti-dumping investigation is obligated to submit its information/data to enable the Authority to arrive at an objective finding. Non-furnishing of the information/data would only lead to situation wherein the Authority would be constrained to proceed further on the basis of facts available. Conceding that in case the domestic industry has not suffered injury during the current period, then too it must come forward by furnishing requisite information/data and substantiate its case that withdrawing the current Anti-dumping duties is likely to lead to recurrence of injury to it.
- As regards the claims and the counter-claims in respect of increase in prices of raw materials *vis a vis* net sales realization etc; the Authority notes that it has

analysed the same taking due cognizance of the information/data provided by the interested parties on the subject in terms of the AD Rules.

- As regards the claim that the export volumes have gone up only because the foreign producers have absorbed the anti-dumping duties wherever imposed and not because of the demand supply gap; the Authority notes the claim has not been substantiated.
- As regards the contention that exports of the subject goods from Chinese Taipei to third countries were at materially dumped prices and the consequent injury margin is positive; the Authority notes that it has examined the same and found that the contention is not based on facts; as would be evident from the relevant sections of these finding. Even the export price after the POI has been examined to evaluate the recurrence of injury claims of the domestic industry; but the analysis of same reveals that imports of the subject goods from the subject country is not likely to lead to recurrence of injury to the domestic industry as per facts available on record.
- As regards the exporters' claim that increase in prices of raw materials to manufacture Acetone is far less than the increase in prices of Acetone in India and globally during the period of investigation of the Mid-term Review investigation and that with overall increase in prices of Acetone the Domestic Industry is making bumper profits etc and that existing Anti-dumping duty on the subject goods from Chinese Taipei is not warranted; the Authority notes that having initiated this investigation these claims have been examined and evaluated as would be evident from relevant sections of this Disicoure statement.
- As regards the exporters' contention that providing 22% ROCE on Capital Employed is totally illogical and should be reviewed; the Authority notes that it has determined the NIP as per the relevant AD Rules on the subject.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION and DOMESTIC 'LIKE ARTICLE'

10. The Product under Consideration in the original investigation was 'Acetone'. The Product under Consideration remains the same for the purposes of this review. As per the original investigation carried out by the Authority, the product has been defined as under:

"The product under consideration is 'Acetone'. Acetone is organic chemical also known as Dimethyl Ketone and used in the manufacture of bulk pharmaceuticals, agro chemicals, dye stuffs, certain explosives and downstream chemicals. Acetone is classified under Chapter 29 of Custom Tariff Act under the sub-heading 29141100."

"It is a basic organic chemical produced in single grade. It is a colourless liquid with an agreeable ether-like odour. It is used in numerous organic synthesis either as solvent or as an intermediate. It is used in manufacture of bulk

pharmaceuticals, agro-chemicals, dyestuffs, certain explosives and downstream chemicals. Acetone is specifically used in manufacture of Isophorone, Diacetone, Alcohol, Methyl Methacrylate and Bishphenol A. Besides this, it is used in manufacture of certain rubber chemicals or Oxy Acethylene Cellulose Acetate."

11. This product is classified under Customs Tariff heading no. 2914.11 of ITCHS. However, the said Customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

F. Scope of the Domestic Industry

12. At the time of the initiation of this investigation, Rule 2(b) of the AD Rules read as follows:-

"“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers may be deemed not to form part of domestic industry”.

13. However, post initiation, this Rule has been amended twice, to presently read, as follows:

"“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”.

14. The Application for review of anti-dumping duty has been filed by M/s Formosa Chemical & Fibre Corporation, Chinese Taipei, an exporter /producer of the subject goods in Chinese Taipei. The company has submitted the requisite information/data substantiating its submissions as regards initiation of this investigation. In response to the initiation notification, M/s HOCL, a major domestic producer of the subject goods has filed its response, claiming to be leading producer of Acetone in India and sought to oppose the claims made by the Applicant. As per the response to the investigation it has been claimed that there is only one more producer of Acetone in the country, namely SI group of India Ltd. however, M/s HOCL represents a major portion of the Indian production.
15. As per information available on record, M/s HOCL is a major producer of subject product in India, which is more than 50% share in Indian production; Thus M/s HOCL constitutes the ‘domestic industry’ for the purpose of the present investigation within the meaning of the AD Rules.

G. Normal Value, Export price and Dumping Margin

Methodology adopted

16. In this investigation, two exporters/producers from Chinese Taipei namely M/s Formosa Chemicals & Fibre Corporation (FCFC) and M/s Taiwan Prosperity Chemical Corporation (TPCC) have filed their questionnaire response. A perusal of the information/data shows significant domestic sales transactions during the period of investigation by the two companies; hence, the normal values for two Chinese Taipei exporters/producers has been determined by taking into account the domestic sales transactions by both the companies in terms of the rules and regulations on the subject. The information/data filed by the companies was undertaken during the on-the site verification. The data so verified have been relied upon for calculation of the normal values.
17. It has been noted that there have been significant variations in the prices of the subject goods on a month-to-month basis; hence the dumping margin analysis has been undertaken on month-wise basis. Besides, it has been noted that M/s TPCC has sold the subject goods on bulk basis as well as in packed form. Hence, the dumping margin for the said exporter has been computed taking cognizance of this distinction as well. It is further noted that there have been certain domestic sales between affiliates. These transaction between affiliates have been compared *vis a vis* the transactions between non-affiliates. In case of M/s TPCC, no significant difference has been observed between the sales made to affiliates and those made to the non-affiliates. In case of M/s FCFC, a difference in the sales between the affiliates and the non-affiliates has been observed. M/s FCFC, during the verification has stated that sales to affiliated parties has been made on terms and conditions as compared to sales made to non-affiliated parties. The sales to affiliated parties constitute major proportion of the total sales and that the difference in prices between affiliated and non-affiliated sales was due to difference in quantity of sales. The adjustments as claimed by the exporters and verified during the on-the spot verification visit have been accepted and adjusted to arrive at the weighted average normal value for the respective co-operating exporter/producer.

M/s Formosa Chemicals & Fibre Corporation

18. The perusal of the Company's response shows that it has sold *** MT of the subject goods in the domestic market through pipelines as well by containers. Certain changes in the adjustments claimed were made during the on-the-spot verification. The company has claimed adjustments on account of Inland Freight, Transportation Fee, Credit Cost, Warehousing Expenses and Technical services. The claims of adjustments as verified during the on-the-spot verification have been accepted. The ex-factory Normal values have been thus calculated on month-wise basis.

M/s Taiwan Prosperity Chemicals Corporation

19. The perusal of the Company's response shows that it has sold *** MT of the subject goods in the domestic market through pipelines as well as in packed form.

The company has claimed adjustments on account of Packing, Loading Charges, Inland Freight, Credit Cost and Bank Charges. M/s TPCC has domestically sold the subject goods in two forms namely bulk and packed. In case of sales in packed form (drums) packing cost is incurred. The same has been reflected as adjustment by the Company. However, stated above, the Normal values have been determined separately for bulk sales and those made in packed form. The claims of adjustments as verified during the on-the-spot verification have been accepted. The ex-factory Normal values have been thus calculated for bulk material & packed form on month-wise basis.

Normal value for non-cooperating exporters

20. To determine the normal value for the non-cooperating exporters, the higher normal values determined for the co-operating exporters on month-wise basis has been adopted. The adjustments allowed to the co-operating exporters have been adjusted to arrive at the ex-factory normal values thereof.

Export price

M/s Formosa Chemicals & Fibre Corporation

21. The perusal of the Company's response shows that it has exported *** MT of Acetone to India during the period of investigation in 9 transactions. However, out of these 9 transactions, 8 were direct sales to India; and one transaction was made through a trader outside India. The said trader has not filed its response in the instant matter and thus has not co-operated in this investigation, therefore Authority has not considered this transaction. It is seen that the exporter has made only bulk sales to India; therefore, the export price for bulk has been determined. It is noted that all sales of the subject goods to India were made on FOB basis and that the expenses with regard to exports up to FOB to India have been incurred by the producer. The company has claimed adjustments on account of Commission, customs clearance fee, Bank Discount Interest, Bank charges, Harbour Facility Charge, Harbour Management Fee, Trade Promotion Service Fee, Harbour Handling Fee, Loading Survey Fee and Warehousing Charges. These Claims of adjustments as verified during the on-the-spot verification have been accepted. The ex-factory export prices have thereafter been calculated on month-wise basis.

M/s Taiwan Prosperity Chemicals Corporation

22. The perusal of the Company's response shows that it has exported *** MT of Acetone to India during the period of investigation in 31 transactions. However, out of these transactions, 30 were direct sales to India; and one transaction was made through a trader outside India. The said trader has not filed its response in the instant matter and thus has not co-operated in this investigation therefore Authority has not considered this transaction. It was seen that of the total 31 invoices, 15 transactions were on CIF basis and 16 transactions were reported on FOB basis. In case of sales to India on FOB basis expenses with regard to exports up to FOB to India have been incurred by the producer and rest all expense are borne by the importer. In case of exports on CIF basis all expenses are incurred by

[illegible]

H. INJURY AND CAUSAL LINK

25. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. Annexure II of the AD Rules provides for objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact on domestic producers of such products. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to price effect of dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increase which would have otherwise occurred to a significant degree.
26. As regards the impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of AD Rules states as follows: "The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."
27. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments of the interested parties. For analyzing the injury parameters, all relevant documents including the audited balance sheet of M/s HOCL, representing the Domestic Industry have been examined and verified by the Authority. The issues relating to the interest of the Indian industry and other issues have been dealt by the Authority under appropriate headings.
28. During the present investigation, the interested parties have argued that there is significant change in the prices of raw materials and consequently the sale realization, profitability of the domestic industry on month to month basis. It has also been argued that the landed values of subject goods have varied on a month to month basis during the POI. Therefore, the interested parties have desired for a month to month analysis of the cost of production, NIP, NSR and the landed values of the subject goods during the POI. Thus, all the interested parties were requested to make available the relevant data on a month to month basis. The Authority has accordingly worked out, the NIP, NSR and the profitability of domestic industry on a month to month basis during the POI. The Authority further notes that the NSR of the domestic industry was consistently higher than the NIP of the domestic industry. Therefore, the domestic industry has earned fairly high profits during the POI.

Demand, Imports & Market Share of the Domestic Industry**Demand, Output and Market shares**

Demand, Output & Market Share	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Domestic Industry sales	MT	26,615	26,007	22,658	26,351
Other domestic producer	MT	12234	14252	20860	12000
Taiwan	MT	12,567	9,549	13,384	21,126
Other countries attracting anti-dumping duties	MT	51,298	54,525	72,934	75,277
Other countries	MT	7,578	2,972	7,535	6,799
		1,10,292	1,07,305	1,37,371	1,41,553
Market share in demand					
Domestic Industry	%	24.13%	24.24%	16.49%	18.62%
Other domestic producer	%	11.09%	13.28%	15.19%	8.48%
Subject Countries	%	11.39%	8.90%	9.74%	14.92%
Other countries attracting antidumping duties	%	46.51%	50.81%	53.09%	53.18%
Other Countries	%	6.87%	2.77%	5.49%	4.80%

29. The Authority has relied upon the IBIS data for computation of the volume of imports as it reflected higher figures *vis a vis* the DGCI&S data. From the above, the Authority notes that:

- Demand of the subject goods has been determined by addition of domestic sales and the imports from all countries. The Authority notes that demand for the subject goods decreased in year 2008-09, but thereafter increasing trend is observed.
- The market share of imports from the subject country reduced in 2008-09 but thereafter increasing trend is observed, and it significantly increased in the POI as compared to the previous year.
- Market share of other countries attracting anti-dumping duty showed increasing trend.
- Share of the domestic industry was constant during the year 2007-08 and 2008-09, with the increase in demand, share of domestic industry decreased during 2009-10 and the POI.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

30. With regard to the effect of dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like article in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

31. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

32. The price suppression and price depression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values of the subject goods from the subject-country.

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	111	107	107
Increase(decrease over previous year)			11.16%	(3.30%)	(0.83%)
Selling Price (NSR)	Rs./Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	101	107
Increase(decrease over previous year)			4.54%	(3.39)%	5.55%

33. After examination, the Authority notes that while in the year 2008-09, the domestic industry was not able to increase its selling price in line with increase in the cost of sales, but in the POI, the selling price has increased despite marginal decrease in the cost of production, that is, no price suppression or price depression is observed during the POI.

Price undercutting and Price underselling effects

Price Undercutting

34. While working out the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been deducted. The landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge and applicable basic customs duty and education cess to the export / CIF prices from the subject countries, as reported by each responding exporter. For others category, landed price has been computed by adding applicable basic customs duty and education cess to the Assessable value as per IBIS data.

For subject country as a whole during the injury period.

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
--	------	---------	---------	---------	-----

Landed Price	Rs/Mt	***	***	***	***
Net Sales Realisation	Rs/Mt	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Mt	***	***	***	***
Price Undercutting as a % of NSR	%	5-10%	10-15%	5-10%	5-10%

35. It is seen that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting price undercutting. However, the landed values have been further analysed vis a vis the NIP determined.

Price Underselling

36. For the purpose of price underselling the landed prices of the imports from subject country have been compared with the Non-injurious price of the domestic industry determined for the POI. It shows that underselling was negative during the POI.

	Unit	POI
Landed Price	Rs/Mt	***
Non Injurious Price	Rs/Mt	***
Price Undercutting	Rs/Mt	***
Price Undercutting as a % of NSR	%	(5-10) %

Examination of other Economic Parameters of Domestic Industry

Capacity, Production and Capacity Utilization of the Domestic Industry

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Installed Capacity	MT	24,640	24,640	24,640	24,640
Production	MT	26,137	26,544	23,084	26,973
Capacity Utilization	%	106%	108%	94%	109%

37. Data of the domestic industry on capacity, production and capacity utilization reveals that the capacity of the domestic industry remained unchanged at 24640 MT during the injury period. The production of subject goods that were increasing until 2008-09 declined during 2009-10, thereafter increase was observed. Thus, the domestic industry was able to utilize its capacity beyond full level except in the year 2009-10.

Sales volume of Domestic Industry

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Sales	MT	26,615	26,007	22,658	26,351
Trend	Indexed	100	98	85	99

38. The above data on the sales of domestic industry shows that the sales have similar trend as production. Sales were reduced only during the year 2009-10.

Inventories

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Opening Stock	Mt	655	176	713	471
Closing Stock	Mt	176	713	1,140	1,093
Average Stock	Mt	416	445	927	782
Average Stock in terms /of No. of Days' sales	Nos.	4.68	5.13	12.27	8.90

39. The average inventory level has increased during the POI as compared to the base year.

40. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

Profits and actual and potential effects on the cash flow

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	111	107	108
Selling Price (NSR)	Rs./Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	101	107
Profit/Loss	Rs./Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	59	56	107
Profit/Loss before Tax	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	57	47	105

PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62	54	105
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	59	49	103

41. The Authority notes that there has been improvement in the profitability of domestic industry in the POI as compared to the base year as well as when compared to the previous period.

Return on investment and ability to raise capital

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	62.88	54.24	104.74
Net Fixed Assets	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	106.57	102.47	102.47
Working Capital	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	118.36	100.50	92.00
Capital Employed	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	114.61	101.13	95.33
Return on Capital Employed	%	57%	31%	30%	62%
Trend	Indexed	100.00	54.86	53.63	109.87

42. The Authority notes that the return on capital employed earned by the domestic industry has also improved as the profitability.

Employment and wages

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Employment (Manpower strength)	Nos.	350	330	330	381
Trend	Indexed	100.00	94.29	94.29	108.86
Wages	Rs.Lacs	591.38	454.91	454.91	514.47
Trend	Indexed	100.00	76.92	76.92	86.39

43. The manpower strength increased during the POI as compared to the base year.

Productivity

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Productivity per employee	MT	74.68	80.44	69.95	70.79
Trend	Indexed	100.00	107.71	93.67	94.80

44. The productivity per employee decreased during the POI, since the manpower strength has increased, but no increase in capacity is observed.

Growth

45. Capacity utilization is optimum during the injury period. Profitability has improved significantly. No price depression was observed.

Investment

46. The Authority notes that the domestic industry had not changed the capacity of the subject goods from the base year to POI. There has been no fresh investment by the domestic industry during the period of investigation. No evidence of any plans for further investment has come to the notice of the Authority.

Magnitude of dumping

47. As discussed in the relevant section, the dumping margins *vis a vis* the co-operative exporters is seen to be negative. However, the dumping margin *vis a vis* the non-co-operative exporters is positive; but dumping of the subject goods is not actionable *per se* unless it causes injury to the domestic industry; and it has been further observed that the injury margins for both the co-operative exporters as well as the non-co-operative exporters are negative.
48. Price Injury during the POI in respect of Co-operative producer and exporter during the POI may be seen as follows:

Producer	Exporter	NIP of DI (Rs./MT)	Landed Value (Rs./MT)	Injury Margin (Rs./MT)	Injury Margin as a (%) of NIP
M/s. Taiwan Prosperity Chemical Ltd.	M/s. Taiwan Prosperity Chemical Ltd.	***	***	***	(0-5)%
M/s. Formosa Chemical Ltd.	M/s. Formosa Chemical Ltd.	***	***	***	(15-20)%
All other exporters from Chinese Taipei	All other exporters from Chinese Taipei	***	***	***	(5-10)%

CAUSAL LINK

49. Submissions made by the interested parties in respect of the issue of causal link have been examined. A detailed examination was made with regard to the issues pertaining to the injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

"It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

Contraction in demand

50. The Authority notes that the demand for the subject goods has increased during the injury period. Thus, possible contraction in demand could not have caused injury to the domestic industry.

Changes in the pattern of consumption

51. Neither the pattern of consumption with regard to the product under consideration has undergone any change, nor has there been any substantiated submission made by any interested party in this regard. The investigation so far has not shown existence of alternate competing products and possible injury being caused by such alternate products.

Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

52. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from Chinese Taipei compete directly with the subject goods supplied by the domestic industry. It is noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses. There is no evidence of trade restrictive practices of and competition between the foreign producers and domestic producers causing injury to the domestic industry.

Developments in Technology

53. There is no allegation of developments in technology, nor has the investigation so far shown that possible injury to the domestic industry could have been caused by developments in technology.

Export performance

54. The Domestic Industry has not exported the subject goods during the POI. In any

case, the Authority has considered only the domestic operations and domestic profitability in its analysis.

Productivity of the Domestic Industry

55. There is no material change in productivity of the domestic industry. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown a growth during the POI as compared to the base year. It is also noted that productivity has shown a growth during the entire injury period along with growth in production and sales.
56. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry taking into consideration cost of production of the domestic industry. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports to determine injury margin. The injury margin has been determined in line with the determination of dumping margins as mentioned in the appropriate heading. The injury margins so worked are seen to be negative.

Likelihood of recurrence of injury in the event of its revocation

Submissions made by the Domestic Industry

57. The Domestic Industry, in brief, has submitted as under:
- The entire market situation is extremely temporary. The interested parties have placed no material to show that the changes in the investigation period were of lasting nature.
 - The mere argument that there is no current dumping and no current injury is not enough.

Submissions made by the Applicant Exporter and other interested parties

58. The exporters, in brief, have submitted as follows:
- Prices of Acetone have increased in India as well as globally. Prices of Acetone from Taiwan to India as well as other countries are rising constantly for more than two years (October 2009 to October 2011). Prices rise in respect of Acetone is not only constant and firm but also stable for more than two years.
 - During the post POI of the MTR the domestic industry has been raising prices of Acetone beyond increase in cost. Domestic industry is making bumper profits and is able to realise more than 100% ROCE at current prices. Domestic industry has increased its price of bulk Acetone; this clearly shows that the increase in price is stable, firm, consistent, permanent and lasting in nature.
 - There is no likelihood of any injury to the Domestic Industry if the anti-dumping duty in respect of imports from Acetone from Taiwan is withdrawn.

Examination by the Authority

59. The Authority has examined the submissions made by the interested parties. The Authority had called for additional information from the co-operating exporters for the period of investigation, as well as subsequent period immediately following the period of investigation with respect to exports of the subject goods from Chinese Taipei to India and its exports to third countries for examining the issues raised by the Domestic Industry in respect of likelihood of injury as mandated under Rule 23. In this regard, the Authority notes as under:

- f. Volume of Exports Post- POI: In order to examine, the likelihood of injury to the domestic industry due to dumping of the subject goods from the subject country, the Authority has undertaken a monthly analysis of the volume of exports of the subject goods to India and other countries from the subject country during the post-POI period as well. The Authority notes that the volume of the exports from Chinese Taipei to India and other countries during the period October 2010 to September 2011 was MT 24512 & 2,31647 MT respectively. The quantum of exports from the subject country during the POI was 21126 MT. From a perusal of the data, there doesn't appear to be any significant surge in the volume of exports from the subject country in the post-POI period, so as to cause injury to the domestic industry. It is also noted that the domestic industry has been able to utilize its installed capacity; hence, there does not appear to be case of likelihood of injury on this account.
- g. Profitability of Domestic Industry: In order to examine the likelihood of injury to the domestic industry due to the dumped imports, the Authority has also undertaken quarter-wise analysis of the cost of production in the post investigation period. The sales realization and the profitability of the domestic industry in the Post POI Period have been examined. The analysis reveals that the domestic industry has consistently made significant profits on the sales of the subject goods. More importantly, the Net sales realization of the domestic industry was noted to be significantly higher than the NIP determined for the domestic industry for the corresponding quarters. Thus, no evidence of price underselling has been noted during the post-POI period.
- h. Landed values of imports, Net Sales Realization (NSR) and NIP: In the post-POI period, the Authority has also undertaken an analysis of the landed values of the subject goods imported from the subject country *vis-à-vis* the NSR of the domestic industry. It is noted that the landed values of imports of the subject goods imported from the subject country were generally lower than the NSR for the domestic industry. However, it was further noted that the landed values of imports were at a price significantly higher than the non-injurious price for the domestic industry for the corresponding period. Therefore, the landed values in the post-POI period were unlikely to cause any injury to the domestic industry. In fact, the injury margin for the post-POI period was consistently negative.
- i. Export prices of the subject goods from the subject country to third countries: It has been argued by the domestic industry that the subject country is selling the subject goods to third countries at a price lower than the export price to India. Therefore, in the event of revocation of the anti-dumping duties, there is likelihood of the subject country diverting their exports to India resulting in

injury to the domestic industry. In this regard, the Authority has undertaken a month-wise analysis of the landed values of exports to third countries from the subject country *vis-à-vis* its exports to India. It is noted that the month wise landed value of exports from third countries as compared to the landed value of exports to India were generally higher. This further suggests that even assuming that some of the exports from the subject countries are diverted to India, consequent upon withdrawal of the duty; it is unlikely that the subject goods from the subject country would cause material injury to the domestic industry.

CONCLUSIONS

60. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submissions of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis, the Authority concludes that:

- i. The subject goods are *entering the* Indian market at prices, which are not causing material injury to the domestic industry.
- ii. The domestic industry's performance has significantly improved and is likely to remain un-impacted by the imports of the subject goods from the subject country.
- iii. The performance of the domestic industry is unlikely to deteriorate if the antidumping duty is withdrawn.
- iv. In view of the above the Authority satisfied on the basis of information received by it that there is no justification for the continued imposition on the anti dumping duty.

RECOMMENDATIONS

61. Having concluded that the subject goods are not likely to enter Indian market at prices, which are causing or likely to cause material injury to the domestic industry; should the present measures be withdrawn and that the situation of domestic industry has significantly improved and is likely to remain un-impacted by the imports of the subject goods from the subject country. In view of the above the Authority is satisfied on the basis of information received by it that there is no justification for the continued imposition on the anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the subject country and hence recommends for its withdrawal.
62. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority